www.batterybusiness.in

वर्ष-1 अंक-2, नवम्बर, 2021

बैटरी व्यापार

Battery Business

ऑनलाइन मासिक

बैटरी, सोलर, इलेक्ट्रिक वाहन और ऊर्जा व्यापार से जुड़े कारोबारियों के लिए प्रकाशित

लिथियम बैटरी कितनी लाभदायक?

सूरज का मानव जीवन में भूमिका

सूर्योपासना

प्रदूषण कम करने में मानव का योगदान जरूरी

प्रकाश पर्व

हमारी आस्था

घर से काम

कितना आसान?

काव्य-आलेख-कहानी

SuperStik
....चिपका रहे !
SPECIALIZED
BATTERY STICKER
KABHI SATH
NA CHHODE
STRONG ADHESIVE
Any Query : +91-9582593779
9910183526
9971293665

संकलक-संपादक
विनय कुमार भक्त

साहित्यिक संपादक मंडल :
माधुरी वर्मा-वाराणसी, डॉ. आशा सिन्हा-पटना
निशा भास्कर-दिल्ली, रेणु कुमारी -पटना
पायल जैन -इटावा, उ.प्र.
मणिकर्णिका पांचाल सूर्यवंशी-दिल्ली
आशुतोष तिवारी -जोधपुर
डॉ. भागवान सहाय मीना -जयपुर
बुद्धप्रिय सुरेश सौरभ गाजीपुरी -गाजीपुर, उ.प्र.

यह सभी पद अवैतनिक हैं ।

डिजाईन, ग्राफ़िक्स टीम :
प्रमोद कुमार
राहुल कुशवाहा

उत्पादन अधिकारी
विजय कुमार सिंह

प्रिंटिंग :
एम.आर. डिजिटल, नारायणा, दिल्ली

*प्रिंटेड कॉपी मूल्य : **रुपये 120/-***
डाक खर्च सहित

सम्पादकीय कार्यालय :
डिजाईनवर्ल्ड
डब्लू जेड -572 एन, बैक साइड,
नारायणा गाँव, दिल्ली-110028
संपर्क : 9582593779
Email : info@batterybusiness.in
Website : www.batterybusiness.in

पत्रिका में प्रकाशित लेखों से संपादक, प्रकाशक, मुद्रक की सहमति अनिवार्य नहीं है ।

बैटरी व्यापार ई-पत्रिका है । पाठकों की मांग पर शुल्क लेकर प्रिंटेड पत्रिका डाक द्वारा भेजी जा सकती है ।

कलम कहे हमारी बात

आपको नमस्कार,

बैटरी व्यापार मासिक पत्रिका का आप अवलोकन रहे हैं, तो हमें अद्भुत खुशी का अनुभव हो रहा है। आज एक जानकारी मैं आपसे लेना चाहता हूं अगर आप बैटरी व्यवसाय से जुड़े हैं। आप ऐसे कितने मैगजीन या पत्रिका का को पढ़ते हैं जिसमें बैटरी व्यवसाय, सोलर व्यवसाय, इलेक्ट्रिक वाहन आदि के खबर प्रमुखता से प्रकाशित होते हैं। मेरी जानकारी में ऐसी कोई मैगजीन नहीं है जिसमें बैटरी व्यापार से जुड़ी खबरों की भरमार हो। इसलिए यह बैटरी व्यापार मासिक ऑनलाइन आपलोगों के खबरों को देश व विदेशों में पहुंचाने के उद्देश्य से प्रकाशित किया जा रहा है।

पत्रिका का मुख्य उद्देश्य छोटे-छोटे ब्रांड के खबरों को प्रमुखता से लोगों तक पहुंचाना, खबरों के माध्यम से आपके ब्रांड का प्रचार करना भी हमारा मुख्य उद्देश्य है। आप अपना प्रोडक्ट बनाते हैं इसकी खबर आपके पड़ोसी शहर तक को नहीं होता। बड़ी कंपनियां अपना प्रचार बड़े संसाधनों के माध्यम से करके अपने प्रोडक्टर के बारे में लोगों तक पहुंचा देती हैं जिससे उनका व्यापार बढ़ता है। पर छोटे उद्यमियों के लिए ऐसा कर पाना संभव नहीं है। बैटरी व्यापार मासिक ऐसे उद्यमियों के लिए सहायक सिद्ध होने वाला है।

इसी तरह छोटे-छोटे उद्योगों के लिए सरकार द्वारा जो घोषणाएं होती है उसकी जानकारी भी छोटे उद्यमियों को नहीं मिल पाती है। बैटरी व्यापार का प्रयास रहेगा की जैसी जानकारी आप लोगों तक साझा करें। इसी तरह छोटे-छोटे बैटरी दुकानदार को भी इस पत्रिका से लाभ मिलने का अनुमान है। बैटरी व्यापार अधिक से अधिक बैटरी ब्रांड, सोलर ब्रांड की जानकारी उन तक पहुंचायेगा जिससे उन्हें अधिक से अधिक ब्रांड विकल्प मिले और लाभ मिल सके।

यह नवम्बर 2021 का अंक आपको कैसा लगा इसकी जानकारी हमें अवश्य दें। पत्रिका के लिए कोई सुझाव हो तो भी हमसे साझा करें। इसके साथ ही अगर आप कोई नया प्रोडक्ट बाजार में ला रहे हैं तो उसकी जानकारी भी हमसे साझा करेंगे इसका प्रचार हम पत्रिका के माध्ययम से निःशुल्क करेंगे।

धन्यवाद!

विनय कुमार भक्त
info@batterybusiness.in
www.batterybusiness.in

इस अंक में.....

विषय-सूची

वर्ष-01 अंक-02 नवम्बर-2021

05 सौर ऊर्जा की व्यवहार्यता में सुधार के लिए पीएम मोदी ने 'वन सन, वन वर्ल्ड, वन ग्रिड' का आह्वान किया

ग्रेटर नोएडा का पहला इलेक्ट्रिक चार्जिंग स्टेशन जल्द खुलेगा

06 लिथियम बैटरी कितनी लाभदयक?

07 निसान विद्युतीकरण पर 5 वर्षों में 17.6 अरब डॉलर खर्च करेगा

नूपुर रिसाइकलर्स 200 ईवी चार्जिंग पॉइंट, बैटरी स्वैपिंग स्टेशन स्थापित करेंगी

इसरो सौर ऊर्जा परियोजनाओं को स्थापित करने के लिए आदर्श स्थानों का सुझाव दे सकता है

08 प्रदूषण कम करने में मानव का योगदान जरुरी

09 ELECTROWER लिथियम सोलूशन्स में सबसे आगे है

10 बैटरी व्यापार को पूरा समझ कर ही शुरू करें: बैटरी स्कूल

साहित्य : काव्य : गुजरे लम्हें

11 सूरज का मानव जीवन में भूमिका

12 प्रकाश पर्व : हमारी आस्था

13 काव्य :अंतरिक्ष

काव्य : चाक पर माटी

काव्य : जुगनू

15 घर से काम कितना आसान

16 मायूसी की गठरी

18 लघुकथा : ठंढ की वह रात

लघुकथा : नजरिया

19 काव्य : पहले का समय था

काव्य : जाएँ तो कहाँ जाएँ

काव्य : भूल गए हम गाँव गली...

21 प्रदूषण की बढ़ती समस्या के प्रति हम आम लोग कितने जागरूक ??

22 बैटरी व्यापार के नए सदस्य

सौर ऊर्जा की व्यवहार्यता में सुधार के लिए पीएम मोदी ने 'वन सन, वन वर्ल्ड, वन ग्रिड' का आह्वान किया

COP26 शिखर सम्मेलन के मौके पर एक कार्यक्रम में बोलते हुए, पीएम मोदी ने कहा कि जीवाश्म ईंधन ने कई देशों को औद्योगिक क्रांति के दौरान अमीर बनने के लिए प्रेरित किया, लेकिन इसने पृथ्वी और पर्यावरण को खराब बना दिया।

भारत प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने सौर ऊर्जा की व्यवहार्यता में सुधार के लिए "वन सन, वन वर्ल्ड, वन ग्रिड" का आह्वान किया और घोषणा की कि अंतरिक्ष एजेंसी इसरो जल्द ही दुनिया को एक कैलकुलेटर प्रदान करेगी जो सौर ऊर्जा को माप सकता है। ग्लासगो में जलवायु शिखर सम्मेलन से इतर "एक्सेलरेटिंग क्लीन टेक्नोलॉजी इनोवेशन एंड डिप्लॉयमेंट" कार्यक्रम में विश्व नेताओं को संबोधित करते हुए, पीएम मोदी ने कहा कि जीवाश्म ईंधन ने कई देशों को औद्योगिक क्रांति के दौरान अमीर बनने के लिए प्रेरित किया, लेकिन इसने पृथ्वी और पर्यावरण को गरीब बना दिया। "औद्योगिक क्रांति जीवाश्म ईंधन द्वारा संचालित थी। कई देश जीवाश्म ईंधन के उपयोग से समृद्ध हुए लेकिन इसने हमारी पृथ्वी और पर्यावरण को भी खराब कर दिया। जीवाश्म ईंधन की दौड़ ने भू-राजनीतिक तनाव भी पैदा किया। हालांकि, आज, प्रौद्योगिकी ने हमें एक बेहतर प्रस्तुत किया है। अपने संबोधन के दौरान "सूर्योपनिषद" का हवाला देते हुए, पीएम मोदी ने कहा कि सब कुछ सूर्य से पैदा हुआ है, सूर्य ऊर्जा का एकमात्र स्रोत है और सौर ऊर्जा सभी का ख्याल रख सकती है। उन्होंने कहा कि भारत में, प्राचीन पाठ में, सूर्योपनिषद में, यह उल्लेख किया गया है कि सब कुछ सूर्य से उत्पन्न हुआ है, सभी ऊर्जा का स्रोत सूर्य है और यह सूर्य से ऊर्जा है जो सभी का पोषण करती है। जब से वहाँ रहा है पृथ्वी पर जीवन, सभी जीवों का जीवन चक्र, दैनिक दिनचर्या को सूर्य के उदय और अस्त होने से जोड़ा गया है। पीएम मोदी ने कहा कि जब तक प्रकृति से यह संबंध बना रहा, तब तक ग्रह सुरक्षित और स्वस्थ रहा। "हालांकि, आधुनिक समय में और आगे की दौड़ की उत्सुकता में, मनुष्य ने प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ दिया और पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुंचाया। अगर हम प्रकृति के साथ संतुलन में जीवन को फिर से स्थापित करना चाहते हैं, तो इस जीवन का मार्ग ही हो सकता है हमारे सूर्य द्वारा प्रकाशित। मानव जाति के भविष्य की रक्षा के लिए, हमें सूर्य के साथ जाना चाहिए, वन सन, वन वर्ल्ड, वन ग्रिड" का आह्वान करते हुए, पीएम मोदी ने कहा कि यह केवल दिन के दौरान उपलब्ध सौर ऊर्जा की चुनौती से निपटने का समाधान है।

ग्रेटर नोएडा का पहला इलेक्ट्रिक चार्जिंग स्टेशन जल्द खुलेगा

इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) के लिए ग्रेटर नोएडा का पहला चार्जिंग स्टेशन जल्द शुरू होने की संभावना है, और शहर के लिए ऐसे 100 स्टेशनों की योजना है।

ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण (जीएनआईडीए) ने कहा कि उसने ईवीएस के लिए चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने के लिए सीईएसएल के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं।

GNIDA ने कहा है कि पहले चार्जिंग स्टेशन को अगले दो हफ्तों में अल्फा कमर्शियल बेल्ट में चालू करने का लक्ष्य है। राष्ट्रीय इलेक्ट्रिक मोबिलिटी योजना के तहत देश भर में इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने के प्रयास किए जा रहे हैं और ग्रेटर नोएडा भी इस अभियान में शामिल हो गया है।

जीएनआईडीए के सीईओ के निर्देश पर, ग्रेटर नोएडा में 100 स्थानों पर इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए चार्जिंग स्टेशन बनाए जा रहे हैं। इसके लिए, जीएनआईडीए ने कन्वर्जेंस एनर्जी सर्विसेज लिमिटेड (ईईएसएल की सहायक कंपनी) के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।

जीएनआईडीए के अतिरिक्त सीईओ दीप चंद्र, वाणिज्य प्रकोष्ठ के प्रभारी और ओएसडी नवीन कुमार सिंह और सीईएसएल के अधिकारियों की उपस्थिति में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

GNIDA ने कहा कि अल्फा कमर्शियल बेल्ट में पहले चार्जिंग स्टेशन के बाद, GNIDA और CESL टीमें शेष प्रतिष्ठानों के स्थानों की पहचान करने के लिए एक संयुक्त सर्वेक्षण करेंगी और 10 दिनों में एक रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगी।

जीएनआईडीए के सीईओ नरेंद्र भूषण ने कहा है कि सीईएसएल के सहयोग से बनने वाले इन चार्जिंग स्टेशनों से इलेक्ट्रिक वाहन चालकों को काफी सुविधा होगी।

सीईएसएल के एमडी और सीईओ महुआ आचार्य ने कहा कि ग्रेटर नोएडा एशिया के प्रमुख औद्योगिक शहरों में से एक है जहां इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने के पर्याप्त अवसर हैं।

लिथियम बैटरी कितनी लाभदायक ?

बैटरी व्यापार : हाल के वर्षों में लिथियम आयन, ली-आयन बैटरी का उपयोग काफी बढ़ा है। वे बैटरी प्रौद्योगिकी के अन्य रूपों पर कुछ विशिष्ट लाभ और सुधार प्रदान करते हैं।

लिथियम आयन बैटरी के अपने फायदे हैं। लिथियम आयन बैटरी तकनीक बहुत तेज दर से आगे बढ़ रही है और समग्र प्रौद्योगिकी में सुधार किया जा रहा है।

बैटरी के ली-आयन सेल का उपयोग करने के कई फायदे हैं। नतीजतन, व्यापक रूप से भिन्न अनुप्रयोगों की एक बड़ी संख्या के लिए प्रौद्योगिकी का तेजी से उपयोग किया जा रहा है। छोटे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से लेकर स्मार्टफोन और लैपटॉप से लेकर वाहनों और कई अन्य एप्लिकेशन तक सब कुछ।

ली-आयन तकनीक के फायदों का मतलब है कि इन बैटरियों में अनुप्रयोगों की संख्या बढ़ रही है, और इसके परिणामस्वरूप उनमें भारी मात्रा में विकास का निवेश किया जा रहा है।

ली-आयन बैटरी के फायदों में शामिल हैं:

उच्च ऊर्जा घनत्व: उच्च ऊर्जा घनत्व लिथियम आयन बैटरी प्रौद्योगिकी के मुख्य लाभों में से एक है। इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे कि मोबाइल फोन को अधिक बिजली की खपत करते हुए चार्ज के बीच लंबे समय तक काम करने की आवश्यकता होती है, हमेशा बहुत अधिक ऊर्जा घनत्व वाली बैटरी की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, बिजली के उपकरणों से लेकर इलेक्ट्रिक वाहनों तक कई बिजली अनुप्रयोग हैं। लिथियम आयन बैटरी द्वारा पेश की जाने वाली बहुत अधिक शक्ति घनत्व एक विशिष्ट लाभ है। इलेक्ट्रिक वाहनों को भी एक बैटरी तकनीक की आवश्यकता होती है जिसमें उच्च ऊर्जा घनत्व हो।

स्व-निर्वहन: कई रिचार्जेबल बैटरी के साथ एक समस्या स्वयं निर्वहन दर है। लिथियम आयन सेल यह है कि उनके स्व-निर्वहन की दर अन्य रिचार्जेबल कोशिकाओं जैसे कि Ni-Cad और NiMH रूपों की तुलना में बहुत कम है। चार्ज होने के बाद पहले 4 घंटों में यह आम तौर पर लगभग 5% होता है, लेकिन फिर प्रति माह लगभग 1 या 2% के आंकड़े तक गिर जाता है।

रखरखाव में कोई परेशानी नहीं: लिथियम आयन बैटरी का एक प्रमुख लाभ यह है कि उन्हें अपने कार्य को सुनिश्चित करने के लिए किसी विशेष प्रकार की रखरखाव की आवश्यकता नहीं होती है। नी-कैड कोशिकाओं को यह सुनिश्चित करने के लिए आवधिक निर्वहन की आवश्यकता होती है कि वे स्मृति प्रभाव प्रदर्शित न करें। चूंकि यह लिथियम आयन कोशिकाओं को प्रभावित नहीं करता है, इसलिए इस प्रक्रिया या अन्य समान रखरखाव प्रक्रियाओं की आवश्यकता नहीं होती है। इसी तरह लेड एसिड सेल्स को रखरखाव की आवश्यकता होती है, कुछ को बैटरी एसिड को समय-समय पर टॉप अप करने की आवश्यकता होती है। सौभाग्य से लिथियम आयन बैटरी के फायदों में से एक यह है कि इसमें सक्रिय रखरखाव की आवश्यकता नहीं होती है।

सेल वोल्टेज: प्रत्येक लिथियम आयन सेल द्वारा उत्पादित वोल्टेज लगभग 3.6 वोल्ट है। इसके कई फायदे हैं। लगभग 1.5 वोल्ट पर मानक निकल कैडमियम, निकल धातु हाइड्राइड और यहां तक कि मानक क्षारीय कोशिकाओं की तुलना में अधिक होने और प्रति सेल लगभग 2 वोल्ट पर लेड एसिड होने के कारण, प्रत्येक लिथियम आयन सेल का वोल्टेज अधिक होता है, जिसके लिए कई बैटरी अनुप्रयोगों में कम कोशिकाओं की आवश्यकता होती है। स्मार्टफोन के लिए एक ही सेल की जरूरत होती है और यह बिजली प्रबंधन को सरल बनाता है।

लोड विशेषताएँ: लिथियम आयन सेल या बैटरी की लोड विशेषताएँ यथोचित रूप से अच्छी होती हैं। आखिरी चार्ज के रूप में गिरने से पहले वे प्रति सेल 3.6 वोल्ट एक उचित स्थिरांक प्रदान करते हैं।

प्राइमिंग के लिए कोई आवश्यकता नहीं: कुछ रिचार्जेबल कोशिकाओं को अपना पहला चार्ज प्राप्त होने पर प्राइम करने की आवश्यकता होती है। लिथियम आयन बैटरियों का एक फायदा यह है कि इसके लिए कोई आवश्यकता नहीं होती है, उन्हें चालू और जाने के लिए तैयार किया जाता है।

विभिन्न प्रकार: लिथियम आयन सेल के कई प्रकार उपलब्ध हैं। लिथियम आयन बैटरी के इस लाभ का मतलब यह हो सकता है कि आवश्यक विशेष एप्लिकेशन के लिए सही तकनीक का उपयोग किया जा सकता है। लिथियम आयन बैटरी के कुछ रूप एक उच्च वर्तमान घनत्व प्रदान करते हैं और उपभोक्ता मोबाइल इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के लिए आदर्श होते हैं। अन्य बहुत अधिक वर्तमान स्तर प्रदान करने में सक्षम हैं और बिजली उपकरण और इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए उपयोगी हैं।

निसान विद्युतीकरण पर 5 वर्षों में 17.6 अरब डॉलर खर्च करेगा

निसान मोटर कंपनी ने घोषणा की कि वह अगले पांच वर्षों में वाहन विद्युतीकरण में तेजी लाने के लिए 2 ट्रिलियन येन (17.59 बिलियन डॉलर) खर्च करेगी, जिसका लक्ष्य ऑटोमोबाइल उद्योग के लिए सबसे तेज विकास क्षेत्रों में से एक में प्रतिद्वंद्वियों को पकड़ना है।

यह पहली बार है जब जापान की नंबर 3 ऑटोमेकर, दुनिया के पहले मास-मार्केट इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) निर्माताओं में से एक, एक दशक से अधिक समय पहले अपने लीफ मॉडल के साथ, एक व्यापक विद्युतीकरण योजना का अनावरण कर रही है।

निसान ईवी बाजार में हिस्सेदारी के लिए पिछले 10 वर्षों में जितना खर्च किया था, उससे दोगुना खर्च करेगा, क्योंकि टोयोटा मोटर कॉर्प और टेस्ला इंक जैसे नए प्रवेशकर्ता अपनी इलेक्ट्रिक-कार योजनाओं के साथ आगे बढ़ते हैं।

निसान ने कहा कि वह 2030 तक 23 विद्युतीकृत वाहन पेश करेगी, जिसमें 15 इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) शामिल हैं, और आठ साल के भीतर लिथियम-आयन बैटरी की लागत को 65% तक कम करना चाहता है। यह मार्च 2029 तक संभावित गेम-चेंजिंग सभी सॉलिड-स्टेट बैटरियों को पेश करने की भी योजना बना रहा है।

नूपुर रिसाइकलर्स 200 ईवी चार्जिंग पॉइंट, बैटरी स्वैपिंग स्टेशन स्थापित करेंगी

घरेलू इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) क्षेत्र में अपनी शुरुआत करते हुए नुपुर रिसाइकलर्स ने कहा है कि उसकी ईवीआई टेक्नोलॉजीज के साथ मिलकर 200 चार्जिंग पॉइंट और कई बैटरी स्वैपिंग स्टेशन स्थापित करने की योजना है।

कंपनी ने एक विज्ञप्ति में कहा कि इन सर्वव्यापी चार्जिंग पॉइंट्स की स्थापना दक्षिण पश्चिम दिल्ली के द्वारका से शुरू हो चुकी है और जल्द ही दिल्ली-एनसीआर के अन्य क्षेत्रों में इसका विस्तार किया जाएगा। कंपनी का लक्ष्य इस वित्तीय वर्ष के अंत तक अन्य मेट्रो शहरों में चार्जिंग पॉइंट के साथ-साथ बैटरी स्वैपिंग स्टेशनों की स्थापना का विस्तार करना है। मेटल स्क्रैप प्रोसेसिंग और रीसाइक्लिंग फर्म ने कहा कि वह ई-टू-व्हीलर्स/ ई-थ्री-व्हीलर्स/ ई-रिक्शा के लिए बैटरी एक्सचेंज की सुविधा और ई-फोर-व्हीलर्स के लिए चार्जिंग की सुविधा की पेशकश करेगी।

2018-2019 में निगमित, नूपुर रिसाइक्लर्स लौह और अलौह धातु स्क्रैप का एक आयातक और प्रोसेसर है। कंपनी यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में श्रेडर और फ्लोटेशन प्लांट से जुड़ी हुई है, जो कि कतरे हुए जिंक स्क्रैप, जिंक डाई-कास्ट स्क्रैप, ज्यूरिक एसएस स्क्रैप और एल्युमिनियम ज़ोरबा ग्रेड के आयात के लिए है।

नुपुर रिसाइकलर्स के फाउंडर राजेश गुप्ता ने कि हम देश भर में इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने को बढ़ावा देने के लिए उपभोक्ताओं के साथ-साथ केंद्र और राज्य दोनों सरकारों से मजबूत नीति समर्थन देखते हैं। इन दो पहलों के साथ, हमारा लक्ष्य इस संक्रमण को तेजी से ट्रैक करना और पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को विश्वसनीय के साथ सक्षम करना है।

हालांकि हाल के वर्षों में ईवी चार्जिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर पिछड़ गया है, एक संपन्न पारिस्थितिकी तंत्र के लिए वाहन की मात्रा और अपेक्षित बुनियादी ढांचे दोनों की आवश्यकता होती है, यह कहते हुए, पारंपरिक विरासत फर्मों और नए जमाने के स्टार्टअप दोनों के प्रवेश के साथ, हालांकि, इलेक्ट्रिक वाहन अपनाने में पहले से ही एक प्रमुख देखा गया है।

पर्याप्त चार्जिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर केवल स्वीकृति को गति देगा, और नुपुर रिसाइक्लर्स इस क्षेत्र में एक प्रमुख प्रवर्तक बनना चाहती हैं।

इसरो सौर ऊर्जा परियोजनाओं को स्थापित करने के लिए आदर्श स्थानों का सुझाव दे सकता है

भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी भारत के भीतर और बाहर अपने भूस्थिर पृथ्वी अवलोकन उपग्रहों से एकत्रित आंकड़ों के साथ सौर ऊर्जा फार्म लगाने के लिए आदर्श स्थान का सुझाव दे सकती है। प्रौद्योगिकी को रुचि रखने वालों को हस्तांतरित किया जा सकता है। यह जानकारी सिवन, अध्यक्ष, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) और अंतरिक्ष विभाग के सचिव ने दिया।

नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के आदेश पर इसरो के अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र (एसएसी), अहमदाबाद द्वारा सौर ऊर्जा क्षमता की गणना के लिए एक एंड्रॉइड एप्लिकेशन विकसित किया गया है।

इस उपकरण का उपयोग सौर ऊर्जा के दोहन के लिए फोटोवोल्टिक सौर पैनलों की स्थापना के लिए किया जा सकता है।

COP26 शिखर सम्मेलन में बोलते हुए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी कहा कि मैं यह भी सूचित करना चाहता हूं कि हमारी अंतरिक्ष एजेंसी, इसरो दुनिया के लिए एक सौर कैलकुलेटर एप्लिकेशन पेश करने जा रही है। इस कैलकुलेटर के साथ, दुनिया में किसी भी जगह की सौर ऊर्जा क्षमता को मापा जा सकता है। उपग्रह डेटा के आधार पर। यह एप्लिकेशन सौर परियोजनाओं का स्थान तय करने में उपयोगी होगा और 'वन सन, वन वर्ल्ड, वन ग्रिड' को भी मजबूत करेगा।

एप्लिकेशन किसी भी स्थान पर मासिक/ वार्षिक सौर क्षमता (kWh/m2 में) और न्यूनतम/अधिकतम तापमान प्रदान करता है। यह उपग्रह छवि पर स्थान भी प्रदर्शित करता है और एक वर्ष में अलग-अलग समय अवधि में दिगंश/ उन्नयन कोण के साथ-साथ दिन की लंबाई प्रदान करता है। इसरो ने कहा कि आवश्यक स्थान को जीपीएस के माध्यम से कुंजीबद्ध किया जा सकता है या प्राप्त किया जा सकता है। पृष्ठभूमि में उपग्रह डेटा के साथ छवि पर स्थान प्रदर्शित होता है।

यह भारतीय भूस्थिर उपग्रह डेटा (कल्पना-1, इन्सैट-3डी और इन्सैट-3डीआर) का उपयोग करके संसाधित मासिक और वार्षिक सौर क्षमता देता है। यह वास्तविक सौर क्षमता की गणना के लिए मासिक न्यूनतम और अधिकतम तापमान भी प्रदान करता है।

प्रदूषण कम करने में मानव का योगदान जरूरी

प्रदूषण की समस्या लगतार बढ़ती जा रही है। हाल के दिनों में भारत की राजधानी दिल्ली में प्रदूषण के चलते स्कूल, ट्रासपोर्ट आदि को 2 सप्ताह के लिए बंद किया गया था। हमारे घरों और आस-पड़ोस में वायु प्रदूषण के कई छोटे, लेकिन महत्वपूर्ण स्रोत हैं। ऐसे स्रोत - वाहन, निर्माण उपकरण, लॉन घास काटने की मशीन, ड्राई क्लीनर, पिछवाड़े की आग, और ऑटो-बॉडी की दुकानें - वहां स्थित हैं जहां हम रहते हैं और काम करते हैं। इन छोटे लेकिन व्यापक स्रोतों से कुल उत्सर्जन संयुक्त राज्य के सभी औद्योगिक स्रोतों की तुलना में काफी अधिक है।

इन स्रोतों से प्रदूषण को रोकने के लिए मानव का सहयोग और योगदान जरुरी है।

अपनी कार कम चलाएं जहाँ बिना कर जाया जा सके वह कार ले जाने से बचें। वाहनों द्वारा मिनेसोटा का निकास वायु प्रदूषण का एक प्रमुख स्रोत है। मानव प्रदूषण को कम करने में अपनी भागीदारी निभा सकता है। साइकिल का प्रयोग करें। बिजली के वाहन प्रयोग करें। अपनी कार को अच्छी मरम्मत में रखें। निकास और ऑक्सीजन सेंसर की समस्याओं को ASAP ठीक करें। हर महीने टायर के दबाव की जाँच करें।

अपना इंजन बंद कर दें। एक निष्क्रिय इंजन प्रदूषण का एक गर्म स्थान बनाता है। बसें और बड़े ट्रक विशेष रूप से अस्वास्थ्यकर निकास उत्पन्न करते हैं। माता-पिता और शिक्षक अपने स्कूलों और डेकेयर को नो-आइडलिंग नीतियों को विकसित करने और लागू करने में मदद कर सकते हैं। एमपीसीए के पास आरंभ करने के लिए संसाधन हैं।

कचरा न जलाएं। अपने घरेलू कचरे को जलाना हमारे स्वास्थ्य और हमारे पर्यावरण के लिए खतरनाक है, और आमतौर पर मिनेसोटा में कानून के खिलाफ है। यदि आप अभी भी अपने कूड़ेदान के लिए जले हुए बैरल, लकड़ी के चूल्हे या आग के गड्ढे का उपयोग कर रहे हैं, तो यह बदलाव का समय है। जानें कि आप क्या कर सकते हैं।

शहर में कैम्प फायर से उत्पन्न धुएँ के रंग के क्षेत्र सैकड़ों लोगों के लिए अस्वस्थ स्थिति पैदा कर सकते हैं, खासकर स्थिर मौसम की स्थिति के दौरान। चूंकि शहरों में पहले से ही ग्रेटर मिनेसोटा की तुलना में प्रदूषण का स्तर ऊंचा है, कृपया शहरी स्थानों में आपके द्वारा शुरू किए जाने वाले कैम्प फायर की संख्या को सीमित करें।

केवल सूखी जलाऊ लकड़ी ही जलाएं। शहरों में किसी भी कचरे को आग में जलाना, यहां तक कि यार्ड के कचरे को भी जलाना गैरकानूनी है।

वायु गुणवत्ता अलर्ट के दौरान कभी भी कैम्प फायर न शुरू करें। वायु प्रदूषण अलर्ट प्रभावी होने पर आप टेक्स्ट या ईमेल प्राप्त कर सकते हैं।

पेड़ लगाएं और उनकी देखभाल करें। पेड़ प्रदूषकों को फिल्टर करते हैं और कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं। पेड़ वातावरण में ऑक्सीजन भी छोड़ते हैं और हमारे घरों को ठंडा रखने में मदद करते हैं। पेड़ों के लाभों के बारे में और जानें।

बिजली या हाथ से चलने वाले लॉन उपकरण पर स्विच करें। गैस से चलने वाले इंजन जैसे लॉनमूवर और लीफ या स्नो ब्लोअर में अक्सर प्रदूषण नियंत्रण उपकरणों की कमी होती है। लॉन घास काटने की मशीन को चलाने में एक घंटा लगभग उतना ही प्रदूषण पैदा कर सकता है जितना कि 100 मील की कार यात्रा में! इसके बजाय हाथ से चलने वाले या इलेक्ट्रिक लॉन केयर उपकरण का उपयोग करें।

कम ऊर्जा का प्रयोग करें। कुशल उपकरण और हीटिंग सिस्टम चुनें। एनर्जी ऑडिट करवाएं और सलाह का पालन करें। बिजली के सामान को बंद कर दें जिसका आप उपयोग नहीं कर रहे हैं। यह सब जोड़ता है।

रेडॉन के लिए अपने घर की जाँच करें। रेडॉन एक रंगहीन, गंधहीन रेडियोधर्मी गैस है जो मिट्टी से आपके घर में रिसती है। मिनेसोटा स्वास्थ्य विभाग से रेडॉन और घरेलू परीक्षण किट के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करें।

ELECTROWER लिथियम सोलूशन्स में सबसे आगे है

इन दिनों देखा जा रहा है की लिथियम बैटरी का प्रचलन सौर्य ऊर्जा में बढ़ता जा रहा है। इसके कुछ मुख्य कारण, जो इस तकनीक को उत्तम बनाते है, वो है, जल्दी चार्ज हो जाना, लम्बे समय तक बैकअप देना, MAINTENANCE फ्री होना, पर्यावरण के लिए अच्छा होना, काफी समय तक इस्तेमाल करने के बाद भी परफॉरमेंस में कोई फर्क नहीं होना और साइज का बहुत छोटा होना।

ELECTROWER , एक ऐसा ब्रांड है को लिथियम सोलूशन्स में सबसे आगे है। एलेक्ट्रोवर, भारत में सर्वोत्तम रिसर्च & डेवलपमेंट कंपनी है जो पिछले 15 साल से Solar Energy में काम कर रहे है। हमने जब अविनाश कुमार (हेड-र&डी) से सोलर PCU के बारे में बात करी तो ये पता चला की भारत में पहला सोलर MPPT PCU बनाने वाले यही थे और तबसे लगातार इस तकनीक पे काम कर रहे है और पिछले 5 साल से अपने ब्रांड से MPPT PCU बना रहे है।

आगे बात करके समझ आया, जैसे आज से 10 साल पहले सोलर क्रांति आयी थी अब लिथियम सोलर INVERTERS की क्रांति आएगी, क्यूंकि लिथियम के इतने फायदे है जो LEAD ACID TUBULAR को बहुत पीछे छोड़ देगा। सही मायने में सोलर का उत्तम तरीके से इस्तेमाल करने के लिए लिथियम पे SWITCH करना ही पड़ेगा। इस विषय पर ELECTROWER के ऑफिसियल YouTube चैनल पर एक वीडियो भी बनाई है।

अब हम आपको इसकी कुछ खासियत आप तक पहुंचा दे, ELECTROWER लिथियम SOLAR PCU , जो की इंटरनल बैटरी के साथ आता है, फटाफट बैटरी को 1 ही घंटे में 70% तक चार्ज कर देता है और 4 घंटे तक का बैककप देता है। इस बैटरी को १५ साल तक भी चला सकते है, ख़ास करके लिथियम बैटरी 2000-2500 साइकिल में आती है जो की इसकी लम्बी लाइफ को पक्का करता है। ये प्रोडक्ट वहाँ के लिए बहुत अच्छा है जहाँ MAINS(ग्रिड) आती जाती रहती है, या ज़्यदा ठण्ड रहती है और जहाँ इन्वर्टर लिए अलग से जगह नहीं होती है।

एलेक्ट्रोवर, एक OEM मनुफैक्ट्रिंग कंपनी है, जो इस प्रोडक्ट को काफी माला में बना के सप्लाई कर रहा है। अपने चैनल नेटवर्क में भी डिस्ट्रीब्यूटर द्वारा कंपनी अपने प्रोडक्ट्स को बेचती है और करीब 90 Service Engineers की टीम North India में सर्विस नेटवर्क को सँभालते है।

बैटरी व्यापार को पूरा समझ कर ही शुरू करें: बैटरी स्कूल

जैसा कि आज के समय में हम देखते हैं कि बैटरी और इनवर्टर के व्यवसाय में एक अलग ही आयाम आ चुका है। हर शहर में खुलने वाली दुकानों की संख्या अचानक से दोगुनी या तीन गुनी हो गई। लोगों का मानना है इस व्यापार में काफी पैसा है परंतु वह काम की बारीकियों को पूर्णतया ना तो जानते हैं और ना ही उनके पास कोई ऐसा माध्यम है जो उनको गाइड कर सके। होता यह है कि 2 या 3 वर्ष तक कार्य करने के उपरांत वह अपना पैसा व प्रतिष्ठा बाजार में गंवाने के बाद कारोबार को बंद कर देते हैं। बैटरी स्कूल यह मानता है कि यदि आप किसी भी कारोबार को शुरू करें तो वह पहले उसके बारे में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करें और उसके उपरांत आप कारोबार की शुरुआत करें। जैसे कि बैटरी व्यापार को शुरू करते समय सबसे पहले आप ट्रेडिंग ही करें क्योंकि उसमें एक सीमित पूंजी में ही कार्य को शुरू किया जा सकता है। 2 से 3 वर्ष पूर्णतया ट्रेडिंग करने के बाद आप असेंबलिंग यानी की बैटरी का बनाना ना की प्लेट बनाना शुरू कर सकते हैं। इसमें लगने वाली पूंजी 10 से 20-लाख रुपए कार्य अनुसार हो सकती है। यह व्यापार आप अपनी पूर्ण क्षमता से करें और मानकों का ध्यान रखें। बैटरी को असेंबल करें यदि आप 3 से 4 वर्ष तक पूर्णता बैटरी असेंबलिंग कार्य को चला पाए हैं तो यकीन मानिए आप प्लेट बनाना भी शुरू कर सकते हैं। plate के कार्य में आपको अपनी पूंजी का 3 गुना पैसा लगाना होगा क्योंकि प्लेट का कारोबार एक लंबे समय के उपरांत आपको रिजल्ट देता है। इस पायदान पर आने के बाद कोई भी त्रुटि आप को भारी नुकसान दे सकती है । इसके लिए बैटरी स्कूल **ट्रेनिंग स्कूल भी चलाता है,** जहां पर आप इसकी ट्रेनिंग ही प्राप्त कर सकते हैं । किसी कंसलटेंट की ऑब्जरवेशन में ही प्लेट बनाना जारी रखें, क्योंकि यह एक पूर्णतया केमिकल प्रक्रिया है और इसकी केमिस्ट्री को समझना अति आवश्यक है। इस अंक में बस इतना ही, अगले अंक में नए विषय के जानकारी के लिए पत्रिका जरुर पढ़ें।

-गौरव शर्मा, संचालक,
बैटरी स्कूल

-: पायल राधा जैन :-
इटावा उत्तर प्रदेश

गुजरे लम्हें

जिंदगी में गुजर गये जाने कितने ऐसे लम्हें
जो छूट गये हमसे उनमें से थे कुछ अपने ॥
याद आया वो घर, जहाँ मैं चहचहाती थी
अपनों के प्रेम में, पायलिया कहलाती थी ॥

दादा दादी का प्यार चाचा चाची का दुलार
आँखों में न आते थे आँसू ऐसा था वो संसार ॥
लड़कपन था कुछ ज्यादा, ज्यादा थी अपनी मनमानी
सबसे छोटी थी घर में, इसलिये थी सबको प्यारी ॥

समय बीतता गया, हर लम्हा यादों में ढलता गया
रह गई वो बातें यादे बनकर, जिंदगी का कारवां चलता गया ॥
मेहंदी रची जिस दिन हाथों में, छूट गया वो आँगन मेरा
साथ लाई जो लम्हें, आज भी जीती हूँ थोड़ा थोड़ा ॥

हँस हँसकर बेटियों को सारे किस्से सुनाती हूँ
भीग जाती है पलकें जब, सबसे उन्हें छिपाती हूँ ॥
यही दर्द है हर बेटी का, जो किसी से नही कह पाती है
एक जीवन में दो घरों में बंटकर, अधूरी ही रह जाती है ॥

जाने कब हँसने खेलने वाली लड़की , इतनी बड़ी हो जाती है
दर्द लिखती है पन्नों पर अपना, सबके सामने मुस्कुराती है ॥

सूरज का मानव जीवन में भूमिका

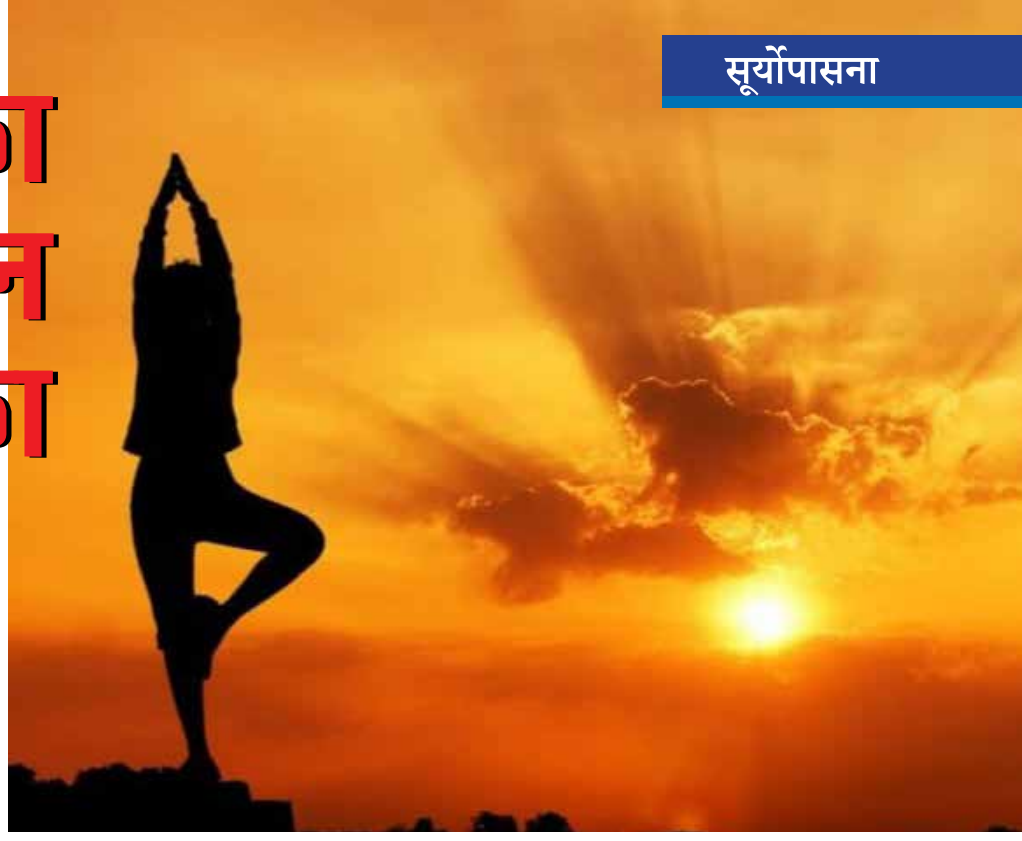

राखी अनामिका

यह तो सर्वविदित है कि सूर्य सौरमंडल के केन्द्र में स्थित वह तारा है, जिसके ऊपर पृथ्वी ही नहीं अन्य ग्रह एवं अवयव निर्भर हैं। ऊर्जा का भंडार सूर्य पृथ्वी से लगभग 109 गुना बड़ा है लेकिन दूर होने के कारण इसकी ऊर्जा का बहुत सा भाग अंतरिक्ष में ही रह जाता है। हमें सूर्य से जितनी भी ऊर्जा मिलती है उसमें से ३० प्रतिशत भाप बन कर वायु में उपस्थित रहता है, जिसकीआवश्यकता पेड़-पौधों को होती है। अनेक गैसों के समिश्रण से बना यह अग्नि पिण्ड भी स्थिर नहीं है, आकाशगंगा के केंद्र की परिक्रमा करता है। सौर परिवार का मुखिया सूर्य ही एकमात नक्षत्र है जिसे हमें देख सकते हैं, अनुभूत कर सकते हैं। बाकी सभी नक्षत्रों को रात में टिमटिमाते हुये ही देख पाते हैं।

सूर्य को वेदों में जगत की आत्मा कहा गया है। पृथ्वी पर जीवन का आधार भी यही है। सूर्य को वैदिक काल से ही सम्पूर्ण सृष्टि के पालनकर्ता के रूप में देखा जाता रहा है। सृष्टि के निर्माण का आधार और प्रत्यक्षदर्शी भी सूर्य ही रहा है। दिन रात हो या ऋतु परिवर्तन सबका एकमात्र कारण यही है। प्राचीन काल में लोगों की धारणा थी कि पृथ्वी स्थिर है सूर्य चलायमान है,तब भी यह महत्वपूर्ण ही था, बाद में वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है। सूर्य का महत्व केवल भौतिक जगत में ही नहीं आध्यात्मिक और ऊर्जा जगत में विशेष रूप से रहा है। पुराणों और उपनिषदों में सूर्य की अपार महिमा से महत्व का वर्णन मिलता है। प्रकाश, स्वास्थय, वंश, तप, मुक्ति के अधिष्ठात्र देवता सूर्य का वैदिक धर्म में ही नहीं आयुर्वेद, ज्योतिष हस्तरेखा शास्त्र में भी विशेष स्थान है। वैदिक काल से ही चराचर जगत के स्वामी सूर्य की उपासना की जाती रही है। जब मूर्ति पूजा नहीं होती थी तब भी सूर्य पूजा होती थी, मंत्रोच्चार से प्रसन्न रखा जाता था। वैदिक धर्म के अनुसार द्वारा तीन लोक माने गये हैं, तीनों लोक का स्वामी सूर्य को ही माना गया है। भास्कर, आदित्य, रवि, दिनकर कई नामों से सूर्य का महत्व प्रतिपादित किया गया है। सूर्यदेव की दो पत्नी कही गयी हैं, संज्ञा और छाया। कहा जाता है कि सूर्य का तेज बहुत ही ज्यादा था, जो सबके लिए सहन योग्य न था। संज्ञा के पिता विश्वकर्मा ने इनके तेज को छाँटकर कम किया। सूर्य में तेज होने के कारण क्रोध भी अधिक है इन्होंने अपने ही पुत्र शनि को शाप देकर उनका घर जला दिया था। कथानुसार समायण काल में सुग्रीव और महाभारत काल में कर्ण का जन्म सूर्य के अंश से ही हुआ था।

सूर्य की सप्तरंगी किरणों में अद्भुत शक्ति है जिससे रोगव्याधि नष्ट होते हैं। हम इसे प्राकृतिक चिकित्सालय भी कह सकते हैं। मानव जीवन को जितनी शुद्ध हवा की जरूरत है उतना ही सूर्य प्रकाश की भी आवश्यकता है। इसकी किरणों में किटाणु नाशक क्षमता होती हैं। इसके प्रकाश से पेड़ पौधे फलते-फूलते हैं, जो हमारे आहार का काम करते हैं। सूर्य के किरणों का व्यापक असर मानव जीवन पर होता है। तथ्यों के आधार पर कह सकते हैं कि मानव और सूर्य के बीच एक अदेखा तारतम्य और संवाद है। सूर्य की गति बदलते ही मानव की गति भी बदल जाती है। हृदय गति हो या रक्त की गति सब पर एक सूर्य की गतिविधि का प्रभाव पड़ता है।

सनातन परंपरा में सूर्य, तुलसी, वायु, जल, अग्नि, अर्थात् जिसे हम प्रत्यक्ष देख सकते हैं, अनुभूत कर सकते हैं जागृत देवता माना जाता रहा है अर्थात् शीघ्र फल देने वाला। सूर्य नमस्कार आराधना और उपासना का प्रथम चरण है। सूर्योदर्य के पूर्व उठना और सर्वप्रथम सूर्य प्रणाम से दिन की शुरुआत करना मनुष्य को सदैव स्वस्थ और ऊर्जा से युक्त रखता है। रविवार का दिन सूर्य को समर्पित माना गया है। इनकी आराधना का अक्षय फल मान-सम्मान, नेतृत्व, नौकरी के रूप में भी प्राप्त होता है। कई जगहों पर सूर्य के भव्य मंदिर हैं जिनमें कोणार्क, मार्तंड, मोढ़ेरा आदि प्रसिद्ध है।

भारत के प्राचीनतम राज्य मगध जो वर्तमान में बिहार के नाम से जाना जाता है वहाँ सूर्य उपासना का विशेष पर्व मनाया जाता है। जिसमें सिर्फ उदय होते हुये सूर्य की ही नहीं अस्त होते सूर्य की भी साधना की जाती है। इसे 'सूर्य षष्ठी' या 'छठ पूजा' के नाम से भी जाना जाता है। कहा जाता है इस दिन अर्घ्य देने से जन्म के पाप नष्ट होते हैं साथ ही आरोग्य और संतान सुख भी बना रहता है।

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है। अतः सूर्य से शरीर ही नहीं मन भी संचालित होता है। शारिरिक सुख के साथ मानसिक शांति का आधार भी सूर्य उपासना है।

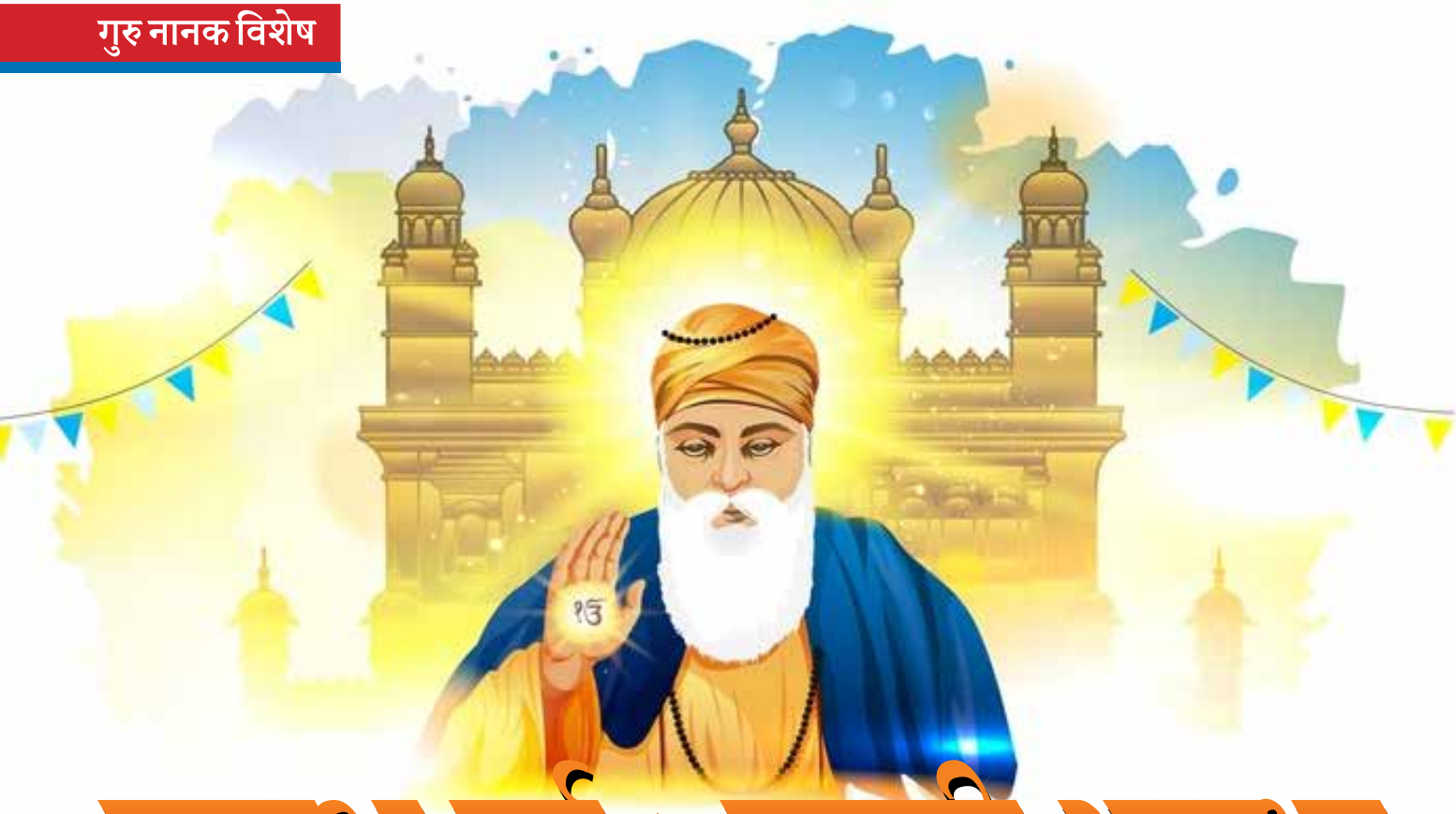

प्रकाश पर्व : हमारी आस्था

गुरु आपके उपकार का
मैं कैसे चुकाऊं मोल
लाख कीमती धन भला
गुरु है मेरा अनमोल

सिख धर्म के संस्थापक एवं सबसे पहले गुरु गुरु नानक देव की जयंती को सिख धर्म में गुरु परब अथवा प्रकाश पर्व अथवा गुरु नानक जयंती के नाम से मनाया जाता है। गुरु नानक जयंती प्रत्येक वर्ष कार्तिक मास की पूर्णिमा के दिन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाई जाती है। यह पर्व सिख धर्म के सबसे बड़े उत्सवों में से एक माना जाता है। गुरु पर्व के दिन गुरुद्वारों में कीर्तन का आयोजन होता है एवं शहर भर में सुबह सुबह प्रभात फेरियां भी निकाली जाती हैं। सिख धर्म के अनुयायी जगह-जगह पर लंगर का आयोजन भी करते हैं एवं इस प्रकार वे गुरु नानक के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। गुरु पर्व के दिन सिख धर्म के अनुयायी विशेषत: अपने अपने घरों को दिवाली की तरह सजाते हैं और प्रकाश करते हैं। गुरुद्वारों में भी इस दिन रोशनी देखते ही बनती है।

वर्तमान समय में सिख धर्म के साथ-साथ अन्य अनेक धर्मों के लोग भी गुरु पर्व को बड़े ही श्रद्धा और आस्था के साथ मनाते हैं क्योंकि भारतवर्ष प्राचीन काल से ही मिली-जुली संस्कृति का परिचायक है। यहां सभी जातियों के, सभी धर्मों के सभी त्योहारों को सभी देशवासी मिलजुल कर मनाते हैं। त्योहारों को मनाते समय उनके मन में किसी भी प्रकार की जाति, वर्ग, भेद का भाव नहीं रहता है। वे सभी त्योहारों को पूरी श्रद्धा और समभाव रखकर बड़ी ही धूमधाम से मनाते हैं। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति आज भी फल फूल रही है नहीं तो सच ही कहा गया है कि:

यूनान मिस्र रोमा सब मिट गए जहां से
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी

और वह बात यही है कि भारतवर्ष के लोगों के मन में आपसी प्रेम और सौहार्द की भावना रक्त के साथ मिली हुई है जिसे चाह कर भी कोई बाहरी तत्त्व कितने भी प्रयासों से अलग नहीं कर सकता।नानक जी के जीवन से ना केवल सिख समुदाय अपितु संपूर्ण मानव जाति को जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है एवं सही दिशा का ज्ञान होता है। उनके जीवन से समूचे समूची मानव जाति के जीवन में आशा का प्रकाश फैलता है और यही कारण है कि नानक जी के जन्मदिवस को प्रकाश पर्व के रूप में मनाया जाता है। नानक जी का जन्म स्थान वर्तमान पाकिस्तान का पंजाब प्रांत है।

गुरु नानक जी मूर्ति पूजा के सख्त खिलाफ थे। उनके अनुसार प्रकृति की प्रत्येक वस्तु में ईश्वर विद्यमान है। मूर्ति पूजा की घोर आलोचना करते हुए गुरु नानक जी मानव सेवा पर बहुत बल दिया करते थे। उनके अनुसार दुखी, दीन, गरीब और असहाय लोगों की सहायता करने से सच्चा सुख प्राप्त होता है और यही सच्ची सेवा भी है। उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज में फैली बुराइयों और कुरीतियों तथा रूढ़ियों को दूर करने के लिए ही लगा दिया। लोगों की सोच को बदलने के लिए उन्होंने भरसक प्रयास किया और काफी हद तक सफलता भी प्राप्त की। वर्तमान समय में जाति और धर्म को लेकर लोगों की सकारात्मक सोच के पीछे नानक जी का समर्पण ही है। उन्होंने लोगों के सोचने समझने के तरीके को नई दिशा दी एवं उनका मार्गदर्शन किया जिससे समाज का चहुंमुखी विकास हो सके एवं सभी लोग एक दूसरे के साथ परस्पर प्रेम से रह सकें।

गुरु नानक पर्व को देशभर में बड़ी ही धूमधाम से मनाया जाता है। इसके लिए कई दिन पहले से जगह जगह पर तैयारियां शुरू कर दी जाती हैं। गुरु नानक पर्व दीपावली के लगभग 15 दिनों के पश्चात आता है क्योंकि जहां दीपावली कार्तिक मास की अमावस्या को मनाई जाती है वहीं गुरु नानक पर्व कार्तिक मास की पूर्णिमा को। इस दिन सिख समुदाय के अधिकतर लोग गुरुद्वारों में अपनी सामर्थ्य एवं श्रद्धा के अनुसार सेवाएं देते हैं एवं दान पुण्य करते हैं।

गुरु नानक जी का विवाह मात्र 16 वर्ष की आयु में ही सुलक्खनी नाम की युवती से हो गया था ।इन के 2 पुत्र थे: श्रीचंद और लक्ष्मीदास ।गुरु नानक जी की मृत्यु 1539 ईस्वी में पाकिस्तान के करतारपुर में हुई थी। उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज सेवा एवं समाज कल्याण में लगा दिया।

सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय में विश्वास रखने वाले गुरु नानक देव जी ने ना केवल भारतवर्ष में अपितु भारत के बाहर अन्य अनेक देशों जैसे ईरान,अफगानिस्तान और अरब देशों में भी उपदेश दिए ताकि वहां के लोग भी समाज सेवा के लिए आगे आएं और समूची मानव जाति का कल्याण हो सके।

नानक जी ना केवल समाज सुधारक थे अपितु एक कवि, एक देशभक्त और एक दार्शनिक भी थे। इन सभी विशेषताओं को खुद में समेट कर उन्होंने विश्व बंधुत्व की भावना का प्रचार प्रसार किया। उनके अनुयायी उन्हें बाबा,नानक और नानकशाह के नामों से भी संबोधित करते हैं। उन्होंने अपना पूरा जीवन लोगों को आपसी भाईचारे और मानव सेवा का मतलब समझाने में लगा दिया ।लोगों में समर्पण और त्याग की भावना का विकास करने में गुरु नानक देव जी हमेशा आगे रहते थे।

गुरु नानक देव जी जो शिक्षाएं समाज के लोगों को दिया करते थे उन सभी शिक्षकों पर स्वयं भी अमल किया करते थे ।उनके अनुसार हर इंसान को अपने जीवन में सच्चाई और मेहनत से ही आगे बढ़ना चाहिए ।उन्होंने अपने जीवन के 18 वर्ष करतारपुर में बिताए। अध्यात्म और ईश्वर की तरफ बचपन से ही नानक जी का काफ़ी रुझान था ।वे पढ़ाई में बहुत अधिक अच्छे नहीं थे परंतु जीवन के असली मायने उनसे बेहतर शायद ही कोई समझता होगा। वे हमेशा कहते थे कि मानवता सर्वोपरि है तथा ईश्वर,अल्लाह ,जीसस, वाहेगुरु सभी एक हैं, केवल नाम अलग हैं।

तो आइए हम प्रण करें कि हम उनके बताए हुए मार्ग का अनुसरण करेंगे एवं मानव जाति के कल्याण के लिए अपना तन मन और धन समर्पित कर एक मिसाल कायम करेंगे।

पिंकी सिंघल, अध्यापिका
शालीमार बाग, दिल्ली

ईश्वर करे कि वो घड़ी
और वो शाम आ जाए
गुरु की कृपा से जब ये जीवन
किसी के काम आ जाए

अंतरिक्ष

-: सुभाष चन्द्रा :-
गोमतीनगर,
लखनऊ,(उ०प्र०)

कुछ अनाम से शब्द
तैर रहे हैं
अंतरिक्ष में
उल्कापिंड के रूप में
वर्षों से
कभी दूर कभी पास
इनका दिखना
इन्हें और रहस्यमयी
बना देता है
कभी इनके टुकड़े
आपस मे ही
टकराकर
उल्कापात-वज्रपात
होने की आशंका
बढ़ा देता है
परत दर परत
छिपे इसमें खनिजों
आदि का रहस्योद्घाटन
होना बाकी है
पर संभव तो तभी होगा
जब वे दृष्टिगोचर हों
कुछ पलों मे वे
क्षितिज कि गहराइयों मे
शून्य में ओझल
हो जाते हैं
कभी कभी कोई
जानी पहचानी सी आकृति
के रूप में
गुजरे हुये वक्त को
आँखों के पर्दे पर
अपना चित्र दिखा जाती हैं
प्रभाव छोड़ जाती हैं
बरबादी के कुछ निशान
भविष्य के गर्त मे
छिपी हुई आशंकाओं को
निर्मित नही करतीं ।

चाक पर माटी

लोकेन्द्र कुम्भकार, शाजापुर (मध्यप्रदेश)

भरी थीं लाख उम्मीदें, रखी जब चाक पर माटी।
करे संघर्ष हर दिन ही, उन्हीं में जिंदगी काटी॥
कभी पूछें कुम्हारों से, हुआ व्यापार कितना है?
चले कठिनाई से घर ही, स्वहित बस लाभ इतना है॥१॥

कला ही बल कुम्हारों का, उसी से जीविका चलती।
परिश्रम खूब करते हैं, कड़ी महनत नहीं खलती॥
नयेपन ने बिगाड़ा है, कमाई- संतुलन उनका।
घटी है माँग कृतियों की, हुआ नुकसान ही उनका॥२॥

घड़े बिकते नहीं उतने, बढ़ी हैं आज चिंतायें।
विवाहों में बहुत कम ही, सभी सामान ले जाये॥
मने दीपावली अच्छी, करे बस आस इतनी ही।
बिके दीपक- कलश सारे, उन्हें है चाह इतनी ही॥३॥

भले ही रौंधता माटी, समाया प्रेम है उसमें।
बनेगी कीमती तब ही, भरे आकार जब उसमें॥
रखा जब चाक पर उसको, अनेकों रूप दे डाले।
मिली पहचान माटी को, बहुत से गुण भरे- ढाले॥४॥

उगाती खेत में फसलें, मृदा की खूब है महिमा।
कुम्हारों का चले जीवन, रहे अक्षुण्ण मृण-गरिमा॥
अमर विश्वास हो जाता, हुआ जब चाक पर नर्तन।
मिले नव-रूप माटी को, कुम्हारों के बने बर्तन॥५॥

जुगनू

-: राधा सिंह :-
वाराणसी
उत्तर प्रदेश

अनगिनत खुशी रूपी जुगनूओं
के इन्तजार में है ज़िन्दगी,
कि आयेगी कभी जीवन
में बहार ऐ जिन्दगी!

कहां खो गए वह दिन बहार के
मिलती थीं खुशियां तब खेल में हार के
माना कि अब हो गए हैं होशियार
पर अब जिंदगी में नहीं रही वो बहार!

ना रहा अब वो बचपन
ना रहीं अब वो खुशियां
भागते थे जुगनूओ के पीछे
होता था जब अंधेरा अब दिखें न
जुगनू न रहा अब वो मौसम बस
चंद दीपों को जला दुर कर रहे
दिल का गुबार!!

अनगिनत खुशी रूपी जुगनूओं
के इन्तजार में है ज़िन्दगी
कि आएगी कभी जीवन
में बहार ऐ जिन्दगी!!!

Transport India

Smart Transport for a Sustainable Future

Including

7th Smart Cities INDIA EXPO

23 24 25 March 2022

Pragati Maidan, New Delhi

THE FUTURE OF MOBILITY

Promoting green & sustainable transportation to secure the future of the next generation and improve the quality of life of our citizens.

2021 SHOW HIGHLIGHTS*

12,786	575	27	11,000
Visitors	Participants	Countries	sqm Exhibit area

TECHNOLOGY ON DISPLAY

- Autonomous technologies
- Charging infrastructure
- Connected car solutions
- Electric fleet management system
- Electric/hybrid vehicle
- Fuel cells
- Parking technology & infrastructure
- Power products
- Public transportation vehicles
- Batteries and storage
- Safety products and services
- Sensors technologies

**Statistics for 6th Smart Cities & 28th Convergence India expo, held from 24-26 March 2021 at Pragati Maidan.*

Media Partner

बैटरी व्यापार
Battery Business
HINDI ONLINE MONTHLY
www.batterybusiness.in

Organiser

Exhibitions India Group
ISO 9001:2015 · ISO 14001:2015 · OHSAS 18001:2007
Committed to Excellence

For more information:

Pulkit Kapoor +91 70425 55388
pulkitk@eigroup.in
www.transportindiaexpo.com

घर से काम कितना आसान ?

कहा जाता है कि दुनिया में हर सौ साल में कोई ना कोई तबाही जरूर आता है और दो से तीन साल तक उसका असर रहता है। इस बार भी कुछ ऐसा ही हुआ है। इसबार इस महामारी का नाम करोना है। पहले के ज़माने में पता नहीं लोगों ने महामारी के समय जिंदगी कैसे जिया होगा? मगर आज के ज़माने में टेक्नोलॉजी के कारण लोगों ने जिन्दगी जीने का तरीका निकाल लिया है। अब लोग घर बैठे ही इन्टरनेट के माध्यम से मीटिंग भी कर रहे हैं, इवेंट भी कर रहे हैं, बच्चे क्लास भी कर रहे हैं, लोग जीम और योगा भी कर रहे हैं। अब हर तरह के काम लोग इन्टरनेट के माध्यम से कर पा रहे हैं । कुछ कार्य के लिए ये अच्छा है तो कुछ के लिये ख़राब। इसके कुछ फायदे हैं तो कुछ नुकसान भी हैं।

अब मैं विषय पर आता हूँ। घर से काम करने को हम अलग-अलग लोगों के लिये अलग-अलग तरीके से देख सकते हैं। जैसे कर्मचारियों के लिये ये कुछ और हो सकता है, व्यापरियों के लिये कुछ और स्वरोजगारियों के लिये कुछ अलग।

मेरा मानना है कर्मचारियों के लिये ये ज्यादा नुकसानदायक है, क्योंकि महामारी के कारण उसको उसकी सैलरी भी कम मिल रही होती है, ऊपर से मोबाइल, लैपटॉप और इन्टरनेट हर समय चालू कर के रखना पड़ता है। अगर वो ऑफिस में काम कर रहा होता तो आठ घंटे की नौकरी होती मगर घर से काम करने के कारण समय-सीमा खत्म हो जाती है। ऑफिस से कभी भी कॉल आ जाता है, कोई सुबह नहीं कोई रात नहीं, कोई शनिवार नहीं कोई रविवार नहीं। आपका अपना कोई समय ही नहीं रहता, हर समय लैपटॉप और मोबाइल पर रहने के कारण आपका शरीर भी बीमारी का शिकार हो सकता है। आप आलसी हो सकते हैं, आपको बैठे रहने की बीमारी हो सकती है, इसके कारण लोग चिड़चिड़ा हो सकते हैं। इसका असर पारिवारिक जीवन पर भी पड़ सकता है । इससे

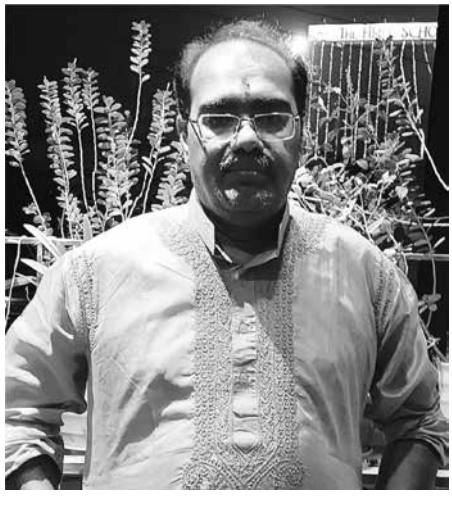

कुछ फायदे भी है जैसे आपको कहीं बंध के नहीं रहना है, आप कहीं भी आ जा सकते हैं जहां इन्टरनेट की सुविधा हो।

अगर मैं व्यापारियों की नजरिये से देखूँ तो घर से काम करवाना या करना ज्यादा फायदेमंद है और थोड़ा नुकसान भी। इसमें अलग-अलग तरह के व्यापारी हो सकते हैं, बड़े व्यापारी को ज्यादा फायदा है छोटे को नुकसान, अगर कोई बड़ा व्यापारी का काम आईटी का है और वो पहले कर्मचारियों को गाड़ी से ऑफिस बुलाता था, उसे खाना या नास्ता भी देता था, वो अपने ऑफिस का रेंट, बिजली, पानी, रख रखाव भी देता था, जो कि खर्चे एक बड़ा हिस्सा होता है। घर से काम करवाने से उसे नहीं देना पड़ता है, इसके अलावा वो व्यापारी महामारी के नाम पर कर्मचारियों की सैलरी भी कम कर देता है। कर्मचारियों को जब चाहे जिस समय चाहे ऑनलाइन आने को कहता है और ज्यादा काम करवाता है तथा वो इसके लिये अलग से कुछ भी स्टाफ को नहीं देता है। इस वजह से वो क्लाइंट से एक्स्ट्रा रुपये भी कमाता है और ये सब अब उसके कंपनी के इंकम में जुड़ जाता है। अगर देखा जाय तो जो व्यापारी पहले कम रुपये कमाता था घर से काम करवाने के कारण ज्यादा बचत कर रहा है और उस कमाई को कम्पनी के ऊपर और व्यापार बढ़ाने में इस्तेमाल कर सकता है।

हाँ छोटे व्यापारी को नुकसान ज्यादा है, घर से काम होने के कारण कस्टमर से मिलना कम होता है। अगर कस्टमर से मिलना कम हुआ तो समान बेचने में भी दिक्कत आती है। कर्मचारियों को बैठा कर सैलरी देने की नौबत आ जाती है। अगर ऑफिस या दुकान रेंट पर है तो उसका रेंट, रख-रखाव का खर्चा भी उठाना पड़ता है। वो डर से उसे निकालता या छोड़ता नहीं की पता नहीं ये अब आगे मिलेगा या नहीं। ऑनलाइन समान बेचने के लिये अचानक से पहले ख़र्चे करने पड़ेंगे, इसलिए छोटे व्यापारी के लिये घर से काम करना नुकसानदायक है।

स्वरोजगार बालों के लिये ये एक अच्छा मौका है। अपने रोजगार को बढ़ाने का क्यूंकि घर से काम आज हर कोई कर रहा है। हर कोई अभी इन्टरनेट पर मौजूद है, तो स्वरोजगार करने वाले आसानी से अपने समान को ऑनलाइन प्रमोशन कर के बेच सकते हैं या ऑनलाइन घर बैठे अपने सर्विस को दे सकते हैं । बड़े रूप में अगर हम इसको देखें तो घर से काम करना जितना फायदेमंद है उतना नुकसानदायक भी।

गौरव कर्ण (गुरुग्राम, हरियाणा)

मायूसी की गठरी

निशा भास्कर (शिक्षिका)
साधनगर,पालम कालोनी, नयी दिल्ली-45

दशहरा मेला का इंतजार हम सभी बच्चे बड़े शिद्दत से करते थे। बाबूजी और मां से मिले पैसे को गुल्लक में डालते समय दशहरा मेला में सजे उन सभी सामानों का ख्याल आ जाता था। जो पिछले साल मेले से नहीं खरीद पाए थे। कितना रोमांचक क्षण होता था। जब गुल्लक में पैसे डाल कर उसकी खनखनाहट सुनने के लिए गुल्लक कान के पास ले जाकर बजाया करते थे तो कभी हथेली पर रखकर उसका भारीपन महसूस करते थे। आज बैंक बैलेंस भले ही भरे हैं । पर उन रेज़गारियों की खनखनाहट की मुकाबला आज दो हजार का नोट कर सके, इतनी इसमें औकात कहां?

अच्छा ममा! कितने रुपए मिलते थे,आपको मेले के लिए ?अर्ची और आदी दोनों ने एक साथ प्रश्न किया।

शुभ्रा अपनी यादों की परत खोलती हुई बोली- पूरे तीस या पैंतीस रुपए। दोनों बच्चे ताली बजाकर हंस पड़े ममा इत्ते से रुपए में क्या खरीदती होंगी आप ?

बच्चों की बातें सुनकर शुभ्रा उत्साहित होकर बोली- अरे नहीं, इतने रुपए में तो झोला भर कर सामान आ जाता था। यह तीस रुपए भी किसी-किसी बच्चों के पास ही होता था। ज्यादातर बच्चों के पास पांच या दस रुपए ही होता था।

अर्ची और आदी आश्चर्य से अपनी आंखें फैलाते हुए बोले- माय गॉड ! ममा दस और पांच रुपए में बच्चे क्या खरीदते होंगे? फिर आदी समझदारी के साथ बोला- अरे अर्ची ! मिलता है ना दस रुपए में कुरकुरे, टेढ़ा है पर मेरा है। हां- हां ठीक कह रहा है। अर्ची ने भाई की बात समझते हुए कहा।

शुभ्रा बच्चों की बातें सुनकर मुस्कुरा दी। वह कैसे समझाएं इन मासूम बच्चों को कि जब वह छोटी थी तब कुरकुरे का अता- पता नहीं था। तब हम दस रुपए पाकर ही कितने खुश हो जाया करते थे। उन रुपयों से जमाने भर की चीजें खरीदने की ताकत रखते थे। उसके आंखों के सामने मेले का वह दृश्य सजीव हो गया। तेल के ऊपर नाचती लाल- लाल जलेबी। जिसे रस में बार-बार डुबकी लगवाते हुए दुकानदार चिल्लाते रहता था-गरम जलेबी, गरम जलेबी। शायद उसकी तेज आवाज के कारण ही उसकी दुकान पर लोगों का हुजूम जमा हो जाता था। फिर पानी पुरी, टिक्की चाट के बिना तो मेले का जायका ही नहीं मिलता था। उसके बाद बारी आती थी खिलौने खरीदने की। तब रंग-बिरंगे मिट्टी से बने सुग्गा, कबूतर, सिर पर मटकी ली हुई गुजरिया या आंगन में बने दियरखा पर सजाने के लिए देवी-देवताओं की मूर्तियां खरीदी जाती थी। मां,भाभी और चाची के लिए रंग- बिरंगी चूड़ियां और बिंदिया भी लड़कियां खरीदती थी। तो लड़के गेंद, बांसुरी और लट्टू खरीदते थे। टन्न्-टन्न् की आवाज सुनकर शुभ्रा की तंद्रा टूटी। अरे बच्चे कहां गए? ना जाने कब बच्चे उठकर अपने कमरे में चले गए थे और वह अपनी बचपन की यादों में खोई है।

आदी ने अर्ची का नया वाला रोबोट टेबल से नीचे गिरा दिया था। उसके टूटने के भय से अर्ची जोर-जोर से रोने लगी थी। जिसे सुनकर वह बच्चों की कमरे की ओर भागी ।अरे क्यों चिल्लम- पों मचा दिया ।

अर्ची मां को कमर से पकड़ कर बोली- मम्मा आप चुपचाप बैठी थी। तब दादाजी ने हमें अपने कमरे में जाकर खेलने के लिए कहा।

हां, पर अर्ची यहां आकर मेरा वीडियो गेम खेलने लगी, तो मैंने उसका रोबोट लिया था।

इसने मेरा रोबोट टेबल पर से गिरा दिया। अर्ची सुबकती हुई बोली।

आदी ने अर्ची के हाथ से रोबोट लेकर उसमें

चाबी भरी और फर्श पर रखा। रोबोट फायर -फायर करते हुए रंग-बिरंगी बत्ती जलाते हुए आगे बढ़ने लगा। वह मासूमियत से बोला-ये देखो, बिल्कुल सही है। वैसे ही रोती रहती है।

पर तुमने गिराया क्यों? अर्ची अपनी आंसू पोंछती हुई बोली।

हे परमात्मा ! ये दोनों कितना लड़ते हैं । शुभ्रा उन दोनों की लड़ाई देखकर खीझती हुई बैठ गई।

आशीष बाबू ड्राइंग रूम से बच्चों और अपनी पुत्रवधू की बातें सुन रहे थे। शुभ्रा को देखकर बोले- क्या हुआ बहू? थक गई या परेशान हो गई?

नहीं, बाबू जी थकी नहीं हूं। आप ही देखिए ना, कैसे यह दोनों जुड़वा भाई- बहन पल भर में गदर मचा देते हैं।

शुभाशीष बाबू अत्यंत स्नेहिल स्वर में बोले इसे ही तो बालपन कहते हैं। उन्होंने दोनों बच्चों की ओर इशारा करते हुए कहा- अब देखो! कैसे एक दूसरे का हाथ पकड़कर कार्टून देख रहे हैं ।

शुभ्रा बच्चों को देखकर मुस्कुराती हुई बोली -जी तभी तो इनके झगड़ों को मैं केवल देखती हूं। इन्हें डांटती नहीं हूं।

आशीष बाबू अपने खयालों में खोए हुए बोले- इन बच्चों की वजह से ही देविका के जाने के बाद मुझे अकेलापन का दंश सहन नहीं करना पड़ा। वह अपनी दिवंगत पत्नी देविका को याद कर मायूस हो गए ।

अपने पिता तुल्य ससुर की मायूसी को महसूस कर शुभ्रा बोली-बाबू जी! मैं आपके लिए अदरक और इलायची डालकर चाय बनाती हूं। बिल्कुल मां

जी की हाथ वाली चाय। शुभ्रा रसोई घर में जाकर चाय के लिए पानी चूल्हे पर चढ़ाया। शीघ्र ही चाय की ट्रे और बिस्किट बाबूजी के सामने रखकर बोली- जानी पहचानी सी खुशबू आ रही है?

आशीष बाबू, शुभ्रा की ओर पुत्रीवत् स्नेह से देख कर बोले- बहुत अच्छी खुशबू आ रही है। चाय की खुशबू से ही मन तृप्त हो रहा है । चाय की चुस्की लेते हुए उन्होंने बात को आगे बढ़ाया। बहू इस बार तो तुम्हारी भी बचपन की यादें गांव जाकर ताजी हो गई होगी। कई सालों बाद तू अपनी मायके दशहरा पूजन के अवसर पर गई थी। बीच में आदी बोल पड़ा- मम्मा हम दशहरा का मेला घूमने तो गए थे। परंतु वह सारे खिलौने जो बचपन में आप खरीदती थी। वह हमारे लिए क्यों नहीं खरीदा।

हां- हां बहू बताओ। तुमने अपने गांव के मेले से क्या खरीदा?

शुभ्रा कुछ उदास होकर बोली- इस बार मैं अपने गांव से मायूसी की गठरी लाई हूं बाबूजी!

यह, यह क्या कह रही हो? आशीष बाबू ने कहा। बच्चों ने जिज्ञासा भरी नजरों से देखते हुए कहा- यह क्या होता है? हमें भी दिखाओ ना?

शुभ्रा बोली- बाबूजी, गांव में मेले के लिए अब पहले जैसा बच्चों में उत्साह नहीं है। अब सभी शहर की ओर आकर्षित हो रहे हैं । शहरों के मॉल और पैलेस उन्हें अधिक भा रहा है। अब मिट्टी के खिलौनों के जगह गांव के बच्चे भी प्लास्टिक से बने खिलौनों से खेलने लगे हैं। मैं एक खास दुकान से हर साल मिट्टी के खिलौने खरीदती थी। खिलौने वाले बाबा का घर भी मुझे पता था। मैं उन्हें ढूंढते हुए उनके घर पहुंची। संयोग से वे अपने दरवाजे पर ही मुझे मिल गए। उन्होंने बताया कि अब कोई मिट्टी का खिलौना नहीं खरीदता। सभी शहर से सुंदर और महंगे खिलौने लाते हैं। हमारी तो रोजी-रोटी ही खत्म हो गई बिटिया! मैंने बाबा को समझाने के तौर पर कहा- यह अच्छा नहीं हुआ। आप लोगों ने तो एक कला को ही खत्म कर दिया। तब उन्होंने आठ-दस बेरंग और पुराने खिलौनों की ओर इशारा करके कहा कि- बिटिया हमारी किस्मत इन खिलौनों की तरह ही बेरंग हो गई है। इन्हें अब कोई नहीं पूछता। हमारी कला को पूछनेवाला कोई नहीं है। उधर देखो चाक- पाट अलग-अलग पड़े हुए हैं। इन मशीनों के युग में इस चाक पर बने खिलौनों को कौन पूछता है? देखो कैसे सब मायूस पड़े हैं। उसकी बातें सुनते-सुनते पता नहीं कब से मैं अपनी आंचल पर गांठ लगाते जा रही थी। बाद में देखा तो महसूस हुआ यह मायूसी की गठरी जाने कितनों के जीवन में बंध गई है।

आशीष बाबू ने कहा बहू खिलौने वाले का कुछ मदद कर देती। इतनी पुरानी जान पहचान है तुम्हारी।

बाबूजी गांव के पुराने लोग हैं। उसमें भी ऐसे मंजे कलाकार, जो मिट्टी में जान डाल दें। आपको तो पता है यह लोग बहुत खुद्दार होते हैं। बिना काम के पैसे लेना इन्हें स्वीकार नहीं। ये अपना अपमान ना समझ ले। इसलिए मैंने वह पुराने रंगहीन खिलौने खरीदी। उसके उन्होंने मात्र पचास रुपए लिए।

अब अपनी मायूसी की गठरी खोल दो शुभ्रा! कहते हुए पुनीत ने प्रवेश किया। उसके पीछे- पीछे एक बूढ़ा व्यक्ति माथे का पसीना साफ करते हुए पुनीत के बगल में आकर खड़ा हो गया।

अरे काका आप? आश्चर्य से शुभ्रा ने कहा।

बूढ़ा व्यक्ति भी चौक कर बोला- बिटिया तू! दोनों की आंखें आश्चर्य जनित मुस्कान के साथ एक -दूसरे को देख रही थीं।

आशीष बाबू बोले- ठीक ही कहते हैं मायके का कोई भी व्यक्ति मन मस्तिष्क में बसे बचपन का कोमल भाव जगा देता है ।

पापा, पापा यह कौन हैं? यह क्या हमारे साथ रहेंगे ? अर्ची और आदी ने उत्सुकता से सवाल किया। यह आपको कहां मिले?

पुनीत दोनों बच्चों का सर सहलाते हुए बोले-हां बेटा! ये अब हमारे साथ ही रहेंगे। ये आपकी ममा के खिलौनेवाले काका है। इनका अब यही परिवार है। बाबूजी की ओर मुखातिब होकर पुनीत बोले- बाबूजी ये दो दिन से हमारे नर्सिंग होम में भर्ती थे। इन्हें कोई बीमारी नहीं है। भूख के कारण सड़क पर बेहोश होकर गिर गये थे। कोई भला व्यक्ति हमारे नर्सिंग होम में इन्हें एडमिट करा गया था।

आशीष बाबू स्वीकृति में सिर हिला रहे थे। दोनों बच्चे ताली बजाकर नाचने लगे। हो-हो खिलौने वाले काका अब हमारे साथ रहेंगे! हमारे लिए खिलौने बनाएंगे।

हां बेटा! गर्दन हिलाकर कृतज्ञतापूर्ण स्वर में खिलौने वाले काका ने कहा- खिलौने बनाऊंगा और आपके बगिया में माली का काम भी करूंगा।

शुभ्रा ने पुनीत की ओर प्रेम और आदर की दृष्टि से देख कर मन ही मन में बोली- आज मुझे फिर से तुमसे मोहब्बत हो गई है! आज तुमने दो मायूस मन की गठरी खोली है। तुम इतने अच्छे कैसे हो , मेरे पुनीत!

ठंड की वह रात

लगभग दस वर्ष पूर्व की घटना है। वह ठंड की ही एक रात थी। एक कस्बाई बस्ती में कवि सम्मेलन था, जिसे पूरा करके मैं लौट रहा था। स्टेशन पर पहुंचते-पहुंचते दो बज गए थे। ट्रेन कुछ लेट थी, तो मैं प्लेटफॉर्म की एक बेंच पर बैठकर ट्रेन का इंतज़ार करने लगा।

तभी मेरी नज़र प्लेटफॉर्म के कोने में लगभग गठरी बनकर पड़े हुए एक आदमी पर पड़ी, जो पड़ा-पड़ा काँप रहा था। गौर से देखने पर मैंने पाया कि वह एक वृद्ध है, जिसके पास पहनने के लिए न कोई ऊनी/गर्म कपड़ा है न ही ओढ़ने के लिए कोई कम्बल।

मेरा मन हुआ कि कवि सम्मेलन में सम्मान के रूप में मिले शॉल को मैं उसे ओढ़ा दूं, पर दूसरे मन ने कहा कि, "शरद यह मूर्खता मत कर, भावना में मत बह, यह तो सम्मान में मिला शॉल है, यह अनमोल है, इसे यूं जाया करना ठीक नहीं।"

पर संवेदना ने कहा, "सम्मान से बड़ी मानवता होती है, परोपकार होता है--------"

"नहीं"

"नहीं"

"नहीं"

"नहीं"

"नहीं"

मैं इसी उधेड़बुन और मानसिक द्वंद्व में फँसा था कि तभी ट्रेन आ गई। मैं ट्रेन की ओर लपका।

गेट पर पहुँचकर मैंने फिर मुड़कर देखा, वह वृद्ध अब भी पड़ा हुआ काँप रहा था। तभी ट्रेन ने रेंगना शुरु कर दिया। मैंने आव देखा न ताव। मैं मुड़ा और दौड़कर कवि सम्मेलन में मिला शॉल उस वृद्ध को ओढ़ाया तथा दौड़कर चलती हुई ट्रेन में चढ़ गया।

मुझे लगा कि मेरे अंतर्मन के साथ ही सारा वातावरण ही गर्म हो गया है, और ठंड कहीं फुर्र हो गई है।

प्रो(डॉ)शरद नारायण खरे
प्राचार्य
शासकीय जेएमसी महिला
महाविद्यालय मंडला,मप्र -481661

नजरिया

पलक की पलकें भींगने को आतुर हो रही थी। पर किसी तरह आँसूओं को गले में उतार अपने कमरे में पहुँची। दरवाजा बंद कर आखिर फफक पड़ी। सिसकियाँ भी नहीं रुक रही थी और मोबाइल की रिंग भी..... किसी तरह अपने को संयत कर फोन उठाया ....फोन पति क्षितिज का था। क्षितिज को भाई के साथ दूसरे दिन ससुराल जाने की सूचना देकर.... काम का बहाना बना उसने फोन रख दिया। सच तो यह था वह विचलित थी। जिस घर में पैदा हुई..... बेशकीमती 24 साल गुजारे.... उसी घर में 24 घंटे भारी है।

दस माह के शादीशुदा जीवन में वह ससुराल मुश्किल से एक - डेढ़ माह ही रही होगी। शादी के हाल बाद क्षितिज का ट्रेनिंग पर जाना और फिर छुट्टियों में उसके आने पर ही वह ससुराल रही.... बाकि दिन उसके मायके में ही गुजरे। सास-ससुर को लगता, इसका अकेले मन कैसे लगेगा... भरे परिवार से आई है... इसलिए क्षितिज के जाते ही वह भी मायके आ जाती।

आज माँ किसी बात पर चाची से कह रही थी ' पलक की विदाई करू फिर आगे कुछ करूँ ...हर महीने-दो महीने में दामाद जी के आने का खटका और फिर चार दिन बाद पलक फिर वापिस यहीं..... कब तक ऐसे चलेगा।'

माँ के मुँह से ऐसे शब्द सुनकर सीधा दिल में चुभ गए थे पलक के। अपने आप को खुद समझाया... ' नजरिया मेरा ही बदल गया है, पहले भी तो माँ डाँटते हुए कढ़वी बातें कहती थी ....पर तब तो हँसी में उड़ा देती थी.... फिर आज क्या हुआ...।

इसी उधेड़बुन में उसने वहाँ के कॉलेज में एडमीशन का बहाना बना, ससुराल जाने का प्रस्ताव रखा.... चाची ने टोका - ' अभी तो तेरे सास-ससुर भी नहीं है पलक, उन्हें आ जाने दे.... फिर चली जाना।'

' चाची अगले हफ्ते वो लोग आ जायेंगें, एडमीशन की डेट न निकल जाए तब तक.... और फिर मैं पहले पहुँच कर... मम्मी जी -पापा जी के आने से पहले घर की साफ-सफाई भी करवा लूँगी। ' पलक कह तो रही थी पर मन के किसी कोने में इंतजार था, कि माँ रोके।'

माँ ने पलक की बात का समर्थन किया कि उसे ससुराल पहुँचना चाहिए। ससुराल जाती पलक ससुराल और मायके के मान का भार उठाए अब भी सोच रही थी.... नजरिया किसका बदला है? ....मेरा या माँ का।

अन्जना अग्रवाल, झाँसी

पहले का समय था

पहले का समय था,
लोग मिल बाँट कर खाते थे।
आज समय ऐसा है,
लोग अकेले अकेले खाते हैं॥

पहले का समय था,
एक छत के नीचे रहते थे।
आज समय ऐसा है,
लोग घरों की दीवार उठा कर रहते हैं॥

पहले का समय था,
लोग कुछ पैसों में काम चला लेते थे।
आज वही कुछ पैसे लोगों को
कम पड़ जाते हैं॥

पहले का समय था,
लोग एक दूसरों के घर आते जाते थे।
आज समय ऐसा है लोग
एक दूसरे का मुंह देखना नही चाहते हैं॥

पहले का समय था,
लोग एक दूसरों के मदद के लिए आगे थे,
आज समय ऐसा है लोग
एक दूसरों का हाथ काटने को आगे आते हैं॥

इंजी० सौरभ पाण्डेय
ग्राम- बैरघाट (रामगंज)
अमेठी (उ० प्र०)

जाएँ तो कहाँ जाएँ

गीतांजलि मृदुल, देहरादून, उत्तराखण्ड

पीत पात थे
झड़ गए हैं
उड़ा ले गई
निर्दय हवाएँ
बिन आश्रय के ठूँठ खड़े हैं
जाएँ तो कहाँ जाएँ ।

सिर की चुनरी
सरक गई है
आशीषों की झड़ी
नहीं है
बुजुर्ग हो गए
कथा अतीत की
अब वो रौनक
कहाँ रही है
धुँधली हो गई
चहुँ दिशाएँ
जाएँ तो कहाँ जाएँ ।

मेले में तू खड़ी अकेली
ना कोई संगी ना सहेली
माँ की ममता को भी तरसे
बाबुल की कहाँ
गयीं सदाएँ
कौन तुझे अब दे दुआएँ
जाएँ तो कहाँ जाएँ ।

भूल गए हम गाँव गली...

भूल गए हम अब गाँव गली,
न मिल रहे हमें पुराने संस्कार।
बड़ों को देख पैर झट से छूते,
अब तो हैलो हाय का प्रचार।

चौके में पीढ़े पे बैठ रोटी खाना,
दूध, दही, घी, छाँछ और अचार।
छोटे भाई-बहन का रूठ जाना,
बापू की डांट माँ का वह प्यार।

अपने दोस्तों संग पेड़ों पे चढ़ना,
बागों में जो बहे मंद-मंद बयार।
खेतों की मिट्टी की सोंधी महक,
दादा-दादी का जो मिला दुलार।

शहरों में हम घर में हो गए कैद,
मिलने को नही होते रिश्तेदार।
समय नही घर जाएं किसी के,
न हम करते हैं अब इंतजार।

घर में हम मोबाइल से चिपके,
साथ खाने का न रहा व्यवहार।
बच्चे भी टीवी में खेल रहे गेम,
कुश्ती दंगल का न रहा प्रचार।

आधुनिकता के नाम पर अब,
होते जा रहे हैं हम कर्जदार।
चाची चाचा हुए आंटी अंकल,
प्यार के न रहे अब न मनुहार।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
ग्राम-कैतहा, पोस्ट-भवानीपुर
जिला- बस्ती 272124 (उत्तर प्रदेश)

कविता, लघुकथा, कहानी, लेख आप भी भेज सकते हैं। संपादक मंडल अगर चयनित करते हैं तो बैटरी व्यापार में प्रकाशित होंगे।
नीचे दिए गए ई-मेल आईडी पर मेल करें :
info@batterybusiness.in

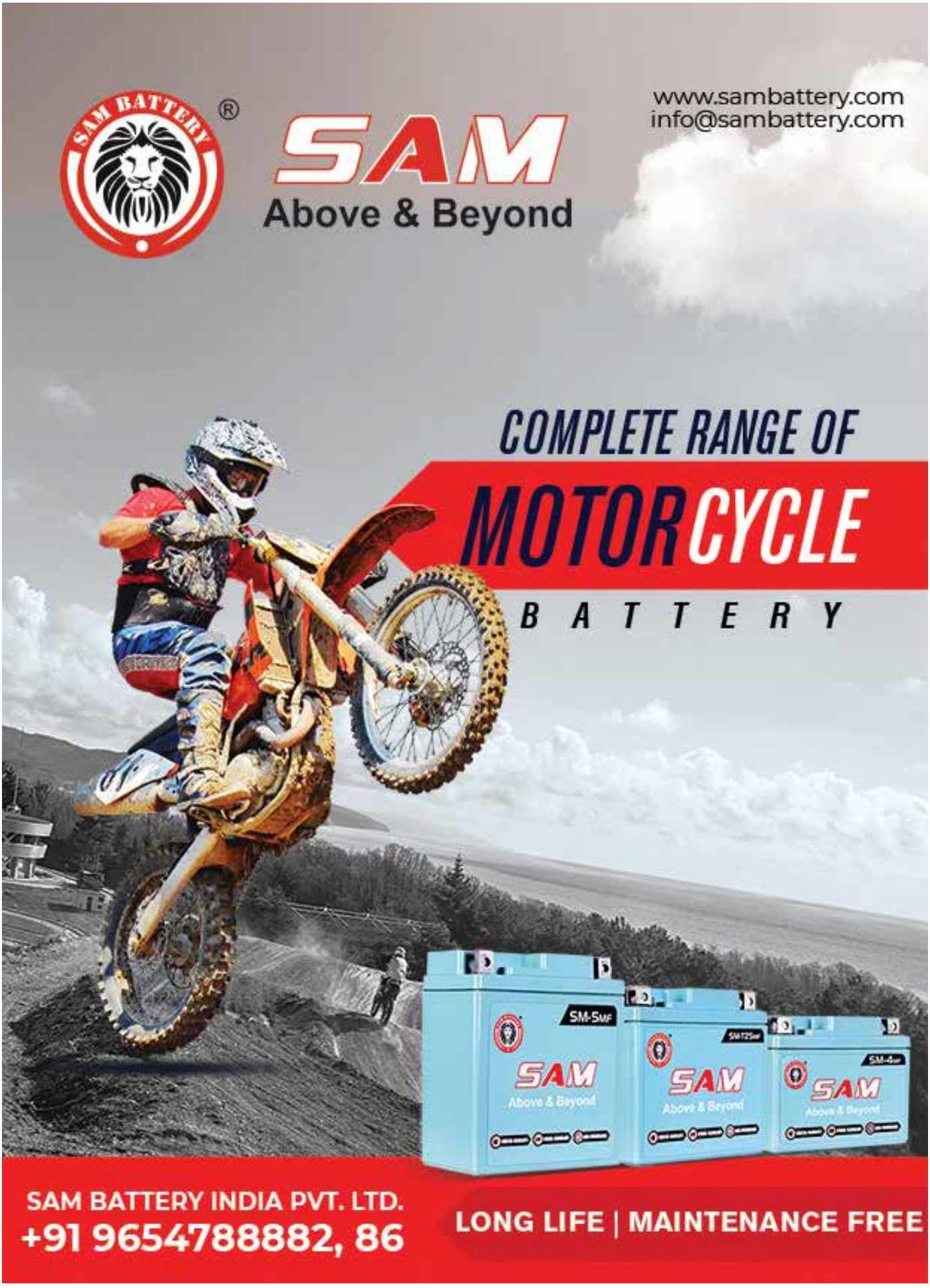

SAM BATTERY
®
SAM
Above & Beyond
www.sambattery.com
info@sambattery.com
COMPLETE RANGE OF
MOTOR CYCLE
BATTERY
SM-5MF
SAM
Above & Beyond
SAM
Above & Beyond
SAM
Above & Beyond
SAM BATTERY INDIA PVT. LTD.
+91 9654788882, 86
LONG LIFE | MAINTENANCE FREE

प्रदूषण की बढ़ती समस्या के प्रति हम आम लोग कितने जागरूक ??

क्या कभी आपने सुना है कि किसी जानवर ने प्रदूषण फैला दिया हो, हम में से हर किसी का एक ही जवाब होगा नहीं। आज तक किसी ने देखा नही है कि किसी जानवर ने ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण या मृदा प्रदूषण फैलाया है। अगर देखा भी है तो वहां जहां जानवरों को पालतू पशु के रूप में पाला है। गाय, भैंस, बकरी, सुअर इत्यादि जानवरोंको इकट्ठा कर जहां रखा जाता है उनके आसपास प्रदूषण होता है, मगर उनकी साफ-सफाई, भोजन पानी का लोग पूरा ध्यान रखते है । जहां जानवर प्राकृतिक तरीके से रहते हैं वहां पर प्रदूषण नहीं होता है।

प्रदूषण का एक सबसे बड़ा कारण हम "इंसान" हैं। हम इंसान शिक्षित, संस्कारी, ज्ञानवान, गुणवान होते हुए भी हर तरह के प्रदूषण फैलाते है। चाहे ध्वनि प्रदूषण हो, वायु प्रदूषण हो, मृदा प्रदूषण हो, जल प्रदूषण हो हम बढ़ा रहे है। हर बार वायु प्रदूषण का विकराल रूप दिपावली के अगले दिन देखने को मिलता है। लगभग देश के सभी शहरों में वायु प्रदूषण का लेवल इतना बढ़ जाता है कि सांस लेना मुश्किल हो जाता है। अस्पतालों में दीपावली के बाद अचानक से सांस संबंधी बीमारियों के मरीजों की लाइन लग जाती है, इसका ताजा उदाहरण दिल्ली है जहां दिवाली के बाद हर साल इतना प्रदूषण बढ़ता है कि हवा में सांस लेना मुश्किल हो जाता है। दिवाली के अगले दिन दिल्ली का एक AQI Index लेवल 533 था जो जहरीला से भी ज्यादा जहरीला होता है। वही नोएडा का AQI index लेवल 622 था एवं गुरुग्राम का AQI Index लेवल 591 था । जो नॉर्मल से बहुत ज्यादा ही खतरनाक स्थिति में था ।

मनुष्यों की सोच क्यों इतनी विकृत होती जा रही है? सभी लोग जानते हैं कि प्रदूषण से सिर्फ और सिर्फ हानि ही हानि है फिर भी हम लोग प्रदूषण फैलाए जा रहे हैं। जैसे-जैसे प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं वैसे वैसे प्रदूषण बढ़ता जा रहा है । जो पेड़-पौधे वायु प्रदूषण को रोकते हैं उन्हें ही हम काट डालते हैं; उनके ही प्रति हम लापरवाह होते है; क्या यह सही है??

लगभग 80% जनता भारत में शिक्षित हो चुकी है परंतु प्रदूषण के मामले में 100% जनता नासमझ बनी हुई है। शादी-विवाह, पार्टी-फंक्शन, क्रिकेट न्यू ईयर सब पर जमकर पटाखे फोड़ती है । पटाखे को भारत में हमेशा के लिए बंद करना करना जरूरी हो गया है अन्यथा आने वाले समय में यह प्रदूषण का लेवल बढ़ता जाएगा और साँस जनित बीमारियां भी

लेखिका-सुनीता कुमारी
पूर्णियाँ, बिहार

बढ़ती जाएंगी। भारत में गाड़ियों की वजह से 28%, पावर प्लांट की वजह से 11% , डीजल जनरेटर की वजह से 10%, कचरा जलाने से 4%, कारखाने से 30%, धूल मिट्टी से 17% वायु प्रदूषण होता है । इस इस प्रदूषण में पराली का भी सहयोग होता है। जैसे-जैसे हम मनुष्य प्रकृति को छोड़कर कृत्रिमता की ओर बढ़ते जा रहे हैं वैसे वैसे प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है। हद तो तब है जब हम शिक्षित होने के बाद भी इस दिशा में कदम नहीं उठा रहे हैं, सतर्क नहीं हो रहे हैं। घर को साफ स्वच्छ रखने में हम जितना ध्यान देते हैं उतना ही ज्यादा हम सड़कों को हम अपने घरों के आसपास कि खाली जगहों को प्रदूषित करते हैं। जहाँ-तहाँ कचरा फेंकते हैं जिससे वायु प्रदूषण बढ़ता है। 2020 की कोरोना महामारी ने लोगों को मास्क पहना दिया और यह मास्क सिर्फ कोरोना ही नहीं प्रदूषण की वजह से भी जरूरी हो गया है।

छोटे शहरो के हर गली मोहल्ले में प्रदूषण का लेवल इतना बढ़ गया है कि सांस लेना मुश्किल हो रहा है। आप सब्जी मार्केट से होकर चले जाइए या फल मार्केट से होकर चले जाइए या या सड़कों के किनारे पैदल चलिए हर जगह प्रदूषण ही प्रदूषण है। लोगों के घर जितने साफ स्वच्छ होते हैं, घर से बाहर उतना ही प्रदूषण बढ़ा हुआ रहता है कि घर से बाहर बिना कोरोना के बिना भी मास्क पहनना जरूरी है। एक कोशिश स्वच्छता अभियान के माध्यम से की गई थी कि हर जगह साफ और स्वच्छ रखा जाए; प्रदूषण को रोका जाए, परंतु यह कारगर साबित नहीं हो रहा है। लोग समझ ही नहीं रहे हैं प्रदूषण से कितना नुकसान हो रहा है। जो लोग स्वस्थ हैं उन्हें तो फर्क नहीं पड़ रहा है लेकिन जो बुजुर्ग है बच्चे हैं उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है।जितना प्रदूषण वायु प्रदूषण से फैल रहा है, उतना ही प्रदूषण ध्वनि प्रदूषण और मृदा प्रदूषण में भी फैल रहा है ।

ध्वनि प्रदूषण का भी हमारे समाज में विकृत रूप देखने को मिल रहा है। आए दिन शादी-विवाह के मौकों पर गाजे बाजे, डीजे, पटाखे बजते और फोड़े जाते हैं, जिसकी भयानक ध्वनि कुछ ही लोगों को अच्छी लगती है जो उस विवाह समारोह में शामिल होते हैं। बाकी आस पड़ोस के लोग बुजुर्ग लोग छात्र जिनकी परीक्षाएं या क्लासेस होते हैं, वे लोग गाजे बाजे बैंड पार्टी, पटाखे डीजे से अत्यधिक परेशान होते हैं। अनिद्रा तो होती ही है, साथ ही बेचैनी भी होती है। सरकार को उन सब चीजों को भी बैन करना चाहिए जिससे ध्वनि प्रदूषण होता है। शादी-विवाह में आतिशबाजी पर भी रोक लगाने जरूरी है क्योंकि आधी रात के वक्त विवाह समारोह में फोड़े जाने वाली आतिशबाजी बहुत ही तकलीफ देह होती है उन लोगों के लिए जो लोग दिन भर काम कर रात को आराम से सोना चाहते हैं, वे बुजुर्ग जो बिमार है। हम आम लोगों को ही समझना होगा कि प्रदूषण से कैसे बचें ? अपने बुजुर्ग अपने बच्चों का कैसे ध्यान रखें? इसलिए गाजों बाजों का विरोध करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य हो गया जिनसे ध्वनि प्रदूषण फैलता है।

वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण की तरह ही खतरनाक स्टेज में जल प्रदूषण भी है। पृथ्वी पर बढ़ते कचरे के कारण जल का भी प्रदूषण लेवल बढ़ा हुआ है। भारत की लगभग सभी नदियां नालों का रूप ले चुकी हैं जो सोचने मात्र से शर्मनाक लगता है हम शिक्षित लोग पृथ्वी पर हर जरूरी और सुंदर चीजों को प्रदूषित कर रहे हैं। भौतिकवादी जिंदगी को बढ़ावा देने चक्कर में हम जिस जमीन पर रह रहे हैं उसी का नाश कर रहे हैं अगर अब नहीं जागे तो बहुत देर हो जाएगी। सरकार को तथा आम जनता को मिलकर इस दिशा में कदम उठाना होगा। जिस भी कार्य या वस्तु से प्रदूषण फैलता है उससे बचना होगा। अधिक से अधिक पेड़ लगाने होंगे, रोजमर्रा की जिंदगी में वैसे वाहन वैसे संसाधन का प्रयोग करना होगा जिससे प्रदूषण नही होता है इसमें बैटरी वाले वाहन बेहतर विकल्प है। सरकार को वैसे कलकारखानो पर भी पाबंदी लगानी होगी जो प्रदूषण के गाइडलाइन की अनदेखी करते है। आम जनता एवं सरकार की जागरूकता से ही प्रदूषण की समस्या से मुक्ति मिल सकती है। वायु प्रदूषण, ध्वनी प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण सब पर रोक लगाने के लिए ठोस नीति के साथ ठोस कार्यवाई भी आवश्यक है।

नये सदस्य

15. **MUHAMMEDALI OM**
SMB ENGINEERING
Venappara PO
Calicut, Kerala-673582
Mob. : +91 98468 81351

16. **SONU BANSAL**
YUKIE MOTORS PVT. LTD.
Plot No. 5, New Auto Market
Behind Hotel the Point, Sirsa Road Hisar-125001,
Haryana, India
Mob. : 9992000962

17. **Hardik Patel**
B 15/16, Bileshwar Industrial Estate, Opp. GVMM, Odhav Kathwada Road,
Odhav-382415, Ahmedabad,
Gujarat.
Mob. : +91 8866805544

18. **SURESH KUMAR SAINI**
SEVA PRIME ENERGY PVT. LTD.
39, Bhairu Nagar, Khirdiyon ka Bas Near VKI Road No. 14, Over Bridge, Jaipur -302013
Mob. : 7300170380

19. **RAJESH KUMAR**
INDIGLOBE POWER BOOSTER PVT. LTD.
House No. 1280, Urban Estate
Jind, Haryana-126102
Mob. : 9355675204

20. **MR. RAMNIWAS**
R.D. ENTERPRISE
V-159, Gali NO. 5, Near 36 Baida, Mandir Marg,
Arvind Nagar, Ghonda
Delhi-110053
Mob. : 9871391007

21. **MR. SACHIN**
JLN PHENIX ENERGY PVT. LTD.
D-9, SECTOR-80,
NOIDA-201305
GB NAGAR, U.P.
Mob. : 9582218125

22 **MR. SUNIL KUMAR**
MBH ENTERPRISES
Shop No. 2506, Suchha Singh Street Mehna Chow, Bhatinda,
Punjab-151001
Mob. : 9317703716

23 MR. Ravi Kumar
Anil Printers
Pink comb Parlour Building, Main Road,
Near Choudhary Petrol Pump
Kankarbagh, Patna-800020
Mob.:9386369992,9304366119

24. MR. SANGEET JAISAWAL
JAISWAL AUTO ELECTRIC & CO.
104/90/120, BAG STATION ROAD BAGHMORE,
KANCHRAPARA, Opp. Central Bank of India
24 Paragna(N) W.B.-743145
Contact No. : +91 7003325733

25. **MR. ABBAS**
G B CORPORATION
BEHIND ICICI BANK, SHANTI NAGAR,
ATHANI-591304, KARNATAKA
Mob. : 9590092221

www.batterybusiness.in

बैटरी व्यापार
Battery Business
ऑनलाइन मासिक

बैटरी, सोलर, इलेक्ट्रिक वाहन, ऊर्जा व्यापार से जुड़े कारोबारियों के लिए प्रकाशित

सदस्यता प्रपत्र

फोटो

नाम _____

पता _____

पता _____ फोन _____

मोबाइल _____ ई-मेल _____

दिनांक _____ हस्ताक्षर _____

विज्ञापन दर

पिछला आवरण	5000/- रुपये
प्रथम आवरण के पीछे	4000/- रुपये
पिछले आवरण के पीछे	4000/- रुपये

पूरा पृष्ठ	3000/- रुपये	आधा पृष्ठ	2000/- रुपये
चौथाई पृष्ठ	1500/- रुपये	न्यूनतम	1000/- रुपये

सदस्यता हेतु अनुदान राशि

एक वर्ष : 1200/- रुपये दो वर्ष : 1800/- रुपये
पांच वर्ष : 4000/- रुपये आजीवन : 11000/- रुपये

सदस्यता हेतु अनुदान राशि चैक/ड्राफ्ट "designworld" के नाम WZ-572N, BACK SIDE, NARAINA VILLAGE DELHI-110028 के पते पर भेजें।

ड्राफ्ट या चैक यस बैंक के नाम पर देय होगा।

Paytm, googlepay, phone pe No. 9582593779

K-SUN™

AUTOMOTIVE BATTERY
SOLAR BATTERY
INVERTER BATTERY

ज्यादा पावर! ज्यादा बैकअप!

LONG LIFE
ECO FRIENDLY
LOW MAINTENANCE

KESHAV BATTERIES

Near Indian Gas Plant, Bichwal, Bikaner Rajasthan-334001
Mob.: +91 95090 94217

staxxa solar

Toll Free : 1800-891-3910

GO SOLAR WITH
STAXXA SOLAR

HIGH POWER OUTPUT
Compared to normal module
the power output can increase 5W-1CW

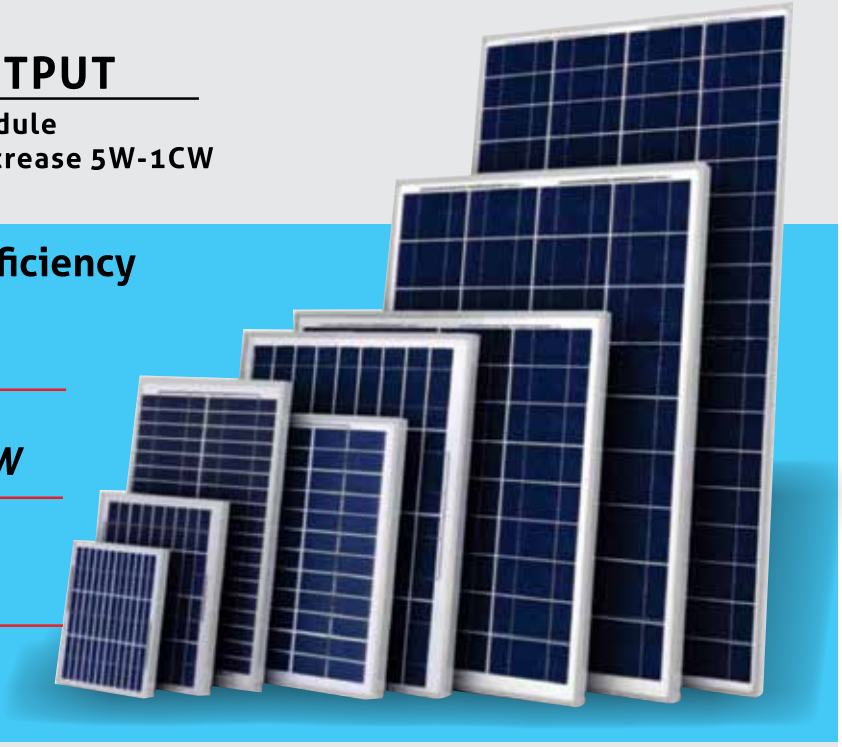

Complete Range of High Efficiency Solar Panels available

Models

12V Poly Series :
40W, 50W, 75W, 100W, 160W

24V Poly Series :
335W, 350W

Monoperc 24V Series :
400W

SPECIAL 5 BUSBAR DESIGN
The unique cell design reduction in electrodes resistance, shading area and raise in conversion efficiency, Residual stress distribution can be more even, reducing the micro-cracks risks.

IP67 RATED JUNCTION BOX
IP67
The unique cell design reduction in electrodes resistance, shading area and raise in conversion efficiency, Residual stress distribution can be more even, reducing the micro-cracks risks.

Email : customercare@staxxasolar.com | Web : www.staxxasolar.com